: तृतीय अध्याय :

: अंधाकुआँमें लोकतत्त्वोंकी स्थिति :

: अंधाकुआँ और लोकभाषा :

लोकभाषा --- अंधाकुआँ की लोकभाषापर प्रकाश डालनेसे पहले लोकभाषा के संबंधमें उचित जानकारी लेना आवश्यक है।

लोकभाषासे तात्पर्य जनसाधारण की भाषासे है। यहाँ लोक और भाषा दोनों अलग अलग शब्द हैं, फिर भी दोनोंका अविछिन्न संबंध है। "लोक" मनुष्य समुदाय का वह वर्ग है जो अशिक्षित है तथा परंपराके प्रवाहमें जीता है। उसका ज्ञान शास्त्रीय अथवा पांडित्य की चेतनासे शून्य होता है। ये लोग जब आपसमें बातचीत व्दारा अभिव्यक्ति करते हैं तो उस भाषा को लोकभाषा कहा जाता है।

अनेक लोकतत्त्वोंमेंसे "लोकभाषा" यह एक लोकतत्त्व है।

लोकभाषा शिक्षितोंकी परिनिष्ठीत भाषासे भिन्न होती है। लेकिन जनसाधारणके लिए सहज और सर्वग्राह्य होती है। तात्पर्य यह कि लोकभाषा आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीय और पांडित्यकी चेतनासे शून्य भलेही हो। लेकिन लोकभाषाका अपना एक स्थान, महत्व एवं उसकी अपनी नजाकत होती ही है।

जनसाधारण की रोजमर्रेकी भाषा लोकभाषा है। इसी भाषा-व्दारा वे अपने विचारोंकी सही सही अभिव्यक्ति करनेमें समर्थ होते हैं।

नाटककार लक्ष्मीनारायण लालने अपने नाटक अंधाकुआँमें इसी लोकभाषाका प्रयोग पगपगपर पात्रोंके व्दारा प्रयुक्त किया है, जो सहज, उचित लगता है। अंधाकुआँ की भाषा साधारण बोलचालकी भाषा है जो कमालपुरमें बोली जाती है। इसका स्वरूप साधारण स्थानीय भाषा-का है। फिर भी यह लोकभाषा ही है। प्रस्तुत कृति स्वाभाविक

बोलचाल के यथार्थ्य शब्दोंसे पूर्ण है। इसमें संस्कृत शब्दोंका प्रयोग नहीं है। लाल लोक भाषाके जानकार है। जिस खूबीसे दर्पण, व्यक्तिगत, मिस्टर अभिमन्यु में आधुनिक, शहरी भाषाका प्रयोग किया है। वहाँ अँधाकुआँ -में लोकभाषाका प्रयोग करनेमें भी सफल हुए हैं। इसलिए आपको भाषा--का किसान कहा जाता है। जिसे अँधाकुआँकी भाषा देखनेपर सही मानना पडता है।

अब हम अँधाकुआँ में लोकभाषाका विश्लेषण करने जा रहे हैं। सबसे पहले अँधाकुआँमें लोकभाषाके अंतर्गत जो विशिष्ट शब्दरूप आए हैं, उनको देखेंगे।

"प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमुल) शब्दरूप"----

प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दोंका लोकभाषामें अनन्य--साधारण महत्व है। प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दोंके रूप जनसाधारण अपनी भाषामें--रोजमर्रेकी भाषामें पगपगपर अनजानेमें प्रयुक्त करते दिखाई देते हैं।

<u>अर्थ</u>:---- प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दरूप याने ऐसे साथ साथ आनेवाले साधारण मिलते जुलते दो दो शब्द प्रतिध्वन्यात्मक शब्दके लिए व्दित्त्वमूलक यह पर्यायी शब्द है।

डा॰ विमलेश कांतिने "भारतेंदुयुगीन हिन्दी काव्यमें लोकतत्व" इस पुस्तकमें लोकभाषाके अंतर्गत प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्द रूपोंको तीन प्रकारोंमें विभाजन किया है।

(१) <u>अर्थहीन</u> ---- निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक(व्दित्त्वमूलक)शब्दरूप।

(२) <u>सार्थक</u> --- अर्थपूर्ण प्रतिध्वन्यात्मक(व्दित्त्वमूलक)शब्दरूप।

(३) <u>भाववमूलक</u> ---- प्रतिध्वन्यात्मक(व्दित्त्वमूलक)शब्दरूप।

लेकिन यहाँ मैंने डा॰ विमलेश कांतिके प्रथम दोन के

अर्थात --(१) अर्थहीन -- निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्दरूप और (२) सार्थक --- अर्थपूर्ण प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्द रूपोंका स्वीकार तो किया है। तो भावमूलक प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्द --रूप को पूर्ण रूपसे निकाल दिया है क्योंकि (१) सार्थक (द्विरुक्तमूलक) प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रूपमें तथा (२) निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्द रूपमें भी भावमूलक प्रतिध्वन्यात्मकता तो होती ही है। इसलिए भावमूलक प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्दरूप का एक अलग प्रकार करनेकी मुझे आवश्यकता नहीं लगी।

लेकिन आगे चलकर सूक्ष्मतासे मैंने (३) एक ही शब्दको दोहरानेवाले प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्दरूप और (४) विरोधमूलक प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्द रूप। इस प्रकार चार विभागोंमें प्रतिध्वन्यात्मक (द्विरुक्तमूलक) शब्द रूपोंको विभाजित किया है।

मेरे द्वारा किया गया वर्गीकरण

प्रस्तुत है। ~~[illegible]~~

. . . .

: प्रतिध्वन्यात्मक (द्वित्वमूलक) शब्दरूप :

(१) सार्थक प्रतिध्वन्यात्मक (द्वित्वमूलक) शब्दरूप।

(२) निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (द्वित्वमूलक) शब्दरूप।

(३) एकही शब्दकी द्विरुक्तिवाले प्रतिध्वन्यात्मक (द्वित्वमूलक) शब्दरूप।

(४) विरोधमूलक प्रतिध्वन्यात्मक (द्वित्वमूलक) शब्दरूप।

. . . .

(१) सार्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्द रूप -----

सार्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्द रूपोंकी विशेषता यह होती है कि इसमें प्रथम शब्दके समानांतरही दूसरे शब्दका निर्माण लोक व्दारा किया जाता है। याने प्रथम शब्दसे ध्वनिमें साम्य रखते हुए दोनों शब्द सार्थक होते हैं।

ऐसे शब्दोंका प्रयोग लोक-भाषा की प्रकृतिसे संबंधित है।

यहाँके दोनोंके दोनों शब्दोंका अर्थगत महत्व होता है।

इसलिए इसका मैंने दूसरा नामकरण भी किया है कि समानांतर और समानार्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्द रूप कह सकते हैं। जिसे डा॰ विमलेश कांतिने प्रारंभमें ही सार्थक --अर्थपूर्ण प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दरूप नाम दे दिया। इस प्रकार मेरेव्दारा दिया गया "समानांतर" नाम मिलानेसे हम इसका परिचय ऐसा भी कर सकते हैं।

(१) सार्थक, अर्थपूर्ण, समान्तर, समानार्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दरूपोंके कुछ उदाहरण --------

(१) डराना - धमकाना। (पृ.३)
(२) औरत - अबला। (पृ.३)
(३) ठाँव-कुठाँव। (पृ.१४)
(४) ताना-बोली (पृ.२१)
(५) बाल-बच्चे। (पृ.३६)
(६) माना-जाना (पृ.२८)
(७) डाँटना-फटकारना (पृ.१७)
(८) घर-गृहस्थी (पृ.६३)
~~(९) बाल-बच्चे ३६~~

(१७) खाना-पीना (पृ ५३)

(१८) बेहया - बेशर्म (पृ ५२)

(२) निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्वमूलक) शब्दरूप ----

"निरर्थक" इस अर्थमें कि प्रारंभमें जैसे की हमने देखा इसमें साथ साथ दो दो शब्द आते हैं। यहीं प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्वमूलक) शब्द रूपकी प्रकृति है।

तो निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्वमूलक) शब्द रूपमें सार्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्वमूलक) शब्दरूपोंकी तरह दोनों शब्द महत्वपूर्ण न होकर केवल प्रथम शब्द ही अधिक महत्वपूर्ण होता है। इसलिए दो शब्दोंमें से व्दितीय शब्दके लिए कहा गया है कि निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्वमूलक) शब्द रूप।

उदा. (१) दिन-- दहाडे (पृ ५) इस निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्वमूलक) शब्द रूपमें ="दिन" शब्द, महत्वपूर्ण है और "दहाडे" शब्दका वैसे देखा जाय तो कोई अर्थ नहीं।

अंधाकुओं में निरर्थक, अर्थहीन प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्वमूलक) शब्दरूपोंके कुछ उदाहरण ----

(१) सोचना-वोचना (पृ ६)

(२) मान-जान (पृ ४८)

(३) समझा-बूझा (पृ ४८)

(४) फूला-फूला (पृ ४९)

(५) घास-फूस (पृ १२९)

(६) बीया-बिसार (पृ ४१)

(७) बन - ढन (पृ७०)

(८) लता-बॅंवर । (पृ१२९)

(९) लेखा-जोखा (पृ२८)

(१०) नात-बॉत । (पृ १२८)

(११) कुऑं- इनारा (पृ४९)

(१२) खाना-वाना (पृ१०४)

(१३) झूठ-मूठ - । (पृ१०१)

अब तक हमने निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दिरुक्तमूलक) शब्दसमूहोंके अंतर्गत जो उदाहरण देखे उसमें प्रथम शब्द सार्थक और व्दितीय शब्द निरर्थक है।

लेकिन कभी कभी इनमें प्रथम शब्द निरर्थक और व्दितीय शब्द सार्थक होता है। इसके केवल तीन ही उदाहरण अंधाकुओंमें मिलते हैं।

(१) दूट- सराप (पृ७०)

(२) कोन-किनारा (पृ१९)

(३) आल-औलाद (पृ ११९)

थोडेमें निरर्थक (व्दिरुक्तमूलक) शब्दसमूहमें कहीं प्रथम शब्द निरर्थक तो कहीं व्दितीय शब्द निरर्थक होता है।

(३) एकही शब्दकी व्दिरुक्तिवाले प्रतिध्वन्यात्मक (व्दिरुक्तमूलक) शब्द समूह-इसमें समान दोन शब्दोंकी पुनरावृत्ति मिलती है।

सार्थक, निरर्थक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दिरुक्तमूलक) शब्द समूहोंमें अर्थकी क्रमशः सार्थकता और निरर्थकता होती है। लेकिन आलोच्य प्रकारमें एकही शब्द दो बार आता है। इसलिए इसे अलग रीतिसे वर्गीकरणमें शामील किया है।

अंधाकुओंमें इस प्रकारके अनेक उदाहरण पात्रोंव्दारा बार बार प्रयुक्त हुए हैं।

(१) रत्ती-रत्ती। (पृ.४)
(२) रोज-रोज। (पृ ४)
(३) झूकी-झूकी। (पृ ११)
(४) धीरे-धीरे। (पृ२२)
(५) खडी-खडी। (पृ २३)
(६) नस-नस। (पृ.२४)
(७) बैठी -बैठी। (पृ२४)
(८) फोर-फोर। (पृ.१३०)
(९) फोड-फोड। (पृ.१३४)
(१०) सीढी-सीढी। (पृ१४६)
(११) अभी-अभी। (पृ१०)
(१२) धाट-धाट। (पृ११)
(१३) पहला-पहला। (पृ१९)
(१४) सात-सात। (पृ.६९)
(१५) चुप्पे-चुप्पे। (पृ. ६७)

(४) विरोधामूलक प्रतिध्वन्यात्मक(व्दित्त्वमूलक) शब्दसमूह— सार्थक, निरर्थक एकही शब्दकी व्दिरुक्तिवाले प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दसमूहकी ही तरह विरोधामूलक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्द समूहमें भी दो दो शब्द समूह साथ-साथ आते हैं। लेकिन साथ-साथ आनेवाले दोन शब्दोंमेंसे प्रथम शब्द समूहके साथ आनेवाला व्दितीय शब्दसमूह सूक्ष्मतासे देखनेपर बिलकुल ही विपरीत, विरोधी होता है। इसलिए मैंने वर्गीकरणमें उसका विरोधामूलक प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दसमूह के नामसे समावेश किया है।

अंधाकुओं इस नाटकमें इस प्रकारके कुछ उदा

CARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

(१) डायन-प्रेतिन । (पृ ५)

(२) नशा-पानी । (पृ १४)

(३) दिन-रात । (पृ २५)

(४) दुलार-पुचकार । (पृ २९)

(५) लाज-शरम । (पृ २९)

(६) खाना-पीना । (पृ ५१)

(७) आते-जाते । (पृ ६८)

(८) इतवार-मंगल । (पृ ११७)

(९) पाथर-पानी (पृ ११३)

(१०) दिया-लिया । (पृ २१)

(११) ऊँचे-नीचे । (पृ २७)

(१२) कुटाई-पिसाई (पृ २८)

(१३) लाल-पीला । (पृ ४१)

(१४) हाथ-पैर । (पृ ५२)

(१५) लेन-देन । (पृ ३१)

(१६) वायु-पित्त । (पृ ११७)

(१७) चाँद-सूरज । (पृ ११३)

(१८) पैखाना-पेशाब (पृ १२९)

(१९) कराहते-पुकारते । (पृ १३०)

(२०) फूँक-तापकर । (पृ ११८)

(२१) बोलना-चालना (पृ १११)

(२२) दाओं-पानी । (पृ १०५)

(२३) देवी-देवता (पृ १०१)

(२४) दो-तीन (पृ ११७)

(२५) मुह-मुल (पृ १३०)

(२६) भूत-शैतान (पृ १४२)

(२७) उठते-बैठते (पृ १२४)

(२८) हाल-चाल (पृ ११८)

इस प्रकार लोकभाषाके अंतर्गत प्रतिध्वन्यात्मक (द्वित्वमूलक) शब्दोंके चार प्रकार यहाँ हमने देखें। लोकभाषामें इनका स्थान और महत्व कुछ और ही है।

लोकभाषा के तत्सम, तद्भव और देशज शब्द अविभाज्य अंग है। लोकभाषामें ~~तत्सम~~ तद्भव शब्दोंकी मात्रा अधिक होती है। क्योंकि इनके मूलमें

(१) प्रयत्नलाघव

(२) मुखसुख

और

(३) काठिन्यसे सरलताकी ओर जानेकी प्रवृत्तियाँ काम करती है।

(१) प्रयत्न लाघव के कुछ उदाहरण -----

~~तद्भव~~ तत्सम शब्द	~~तत्सम~~ तद्भव शब्द
गो ---	गऊ (पृ ५)
इंद्र ---	इंदरवा (पृ १३८)
खयाल ----	ख्याल (पृ १४०)
उद्भव ----	उभौ (पृ १०१)
स्वामी ----	सामी (पृ ८६)

(२) मुखसुख के कुछ उदाहरण -----

	तत्सम शब्द		तद्भव शब्द
(१)	पत्थर	----------	पाथर (पृ. ११३)
(२)	पुरवैया	------	पुरवैइयाँ (पृ. १०६)
(३)	ब्रह्म	---------	बरह्म (पृ. ११०)
(४)	अग्निबान	------	अगिनबान (पृ. ११०)
(५)	प्रपंच	--------	परपंच (पृ. ११६)

(३) काठिन्यसे सरलताकी ओर जानेकी प्रवृत्ति -----

	तत्सम शब्द		तद्भव शब्द
(१)	चरित्र	-----	चरित (पृ. ११९)
(२)	प्रेत	---	परेत (पृ. १२२)
(३)	सप्तमी	-----	सत्तमी (पृ. १०७)
(४)	निर्वंश	----	निरवंश (पृ. १०२)
(५)	गर्दन	----	गरदन (पृ. ७१)
(६)	मर्द	-----	मरद (पृ. १०४)

इस प्रकार भलेही उपर्युक्त तीन विभागोंमें इन्हें विभाजित क्यों न करें ? लेकिन कम अधिक मात्रामें प्रत्येक तद्भव शब्दमें ये तीनों प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहा करती हीं है। इन तीनोंकी सीमारेखाएँ आपसमें घुलमिल गई हैं।

अंधाकुआँ के कुछ ~~तत्सम~~ तद्भव शब्द निम्नस्थ हैं -------

~~तद्भव~~ तत्सम शब्द।		~~तत्सम~~ तद्भव शब्द।
(१) ज्ञानदान	-----	ज्ञान्दान। (पृ ५)
(२) शहादते	----	सहादते। (पृ ११)
(३) चरित्र	----	चरित्तर। (पृ १४)
(४) अंधा	-----	अन्हरा। (पृ ५२)
(५) वर्षा	---	बारिस। (पृ ५२)
(६) द्वार	----	दुवार। (पृ ६२)
(७) विषधार	-----	विखधार। (पृ ६९)
(८) स्वामी	----	सामी। (पृ ८६)
(९) शामत	----	सामत। (पृ ९१)
(१०) रक्षी	----	रक्खी। (पृ ९४)
(११) माधव	-----	माधो। (पृ १०१)
(१२) मर्द	---	मरद। (पृ १०४)
(१३) परोसना	----	परसना। (पृ १०८)
(१४) लग्न	---	लगन। (पृ ११०)
(१५) घबराओ	----	घबड़ाओ। (पृ १११)
(१६) नागिन	----	नागन। (पृ ११४)
(१७) पितरपक्षा	----	पितरपक्खा। (पृ ११९)
(१८) वृश्चिक	---	बिच्छी। (पृ १२२)
(१९) दक्षिण	----	~~दक्षिन~~ दाक्खिन। (पृ १२३)
(२०) भैया	---	भइया। (पृ १२७)
(२१) युग-युग	---	जुग-जुग। (पृ १२८)
(२२) कपोल	----	कपार। (पृ १४४)
(२३) लक्ष्मी	---	लछिया। (पृ १४५)
(२४) बंधाना	---	बन्हाना। (पृ १४९)
(२५) पश्चिम	----	पच्छू। (पृ. ७१)

तद्भव शब्द / तत्सम		तत्सम शब्द / तद्भव
(२५) तीर्थ	-----	तीरथ (पृ १५३)
(२६) प्रभा	---	परभुआ (पृ 22)
(२७) अनजाम	---	अंजाम (पृ ६)
(२८) अलगू	-----	अलगुआ (पृ 24)
(२९) फुर्सद	---	फुरसद (पृ 39)
(३०) दिया	----	दिहिस (पृ 22)
(३१) अँगुलियाँ	---	उँगुरिया (पृ २२)
(३२) ब्राह्मण	----	बाभन (पृ २६)
(३३) अरमान	----	अरमान अरमानि (पृ २८)
(३४) प्रसाद	----	परसाद (पृ 20)
(३५) धर्म	---	धरम (पृ 64)
(३६) बेशर्म	---	बेशरम (पृ 42)
(३७) जय जय	---	जै-जै (पृ 30)
(३८) मौसा	----	मौसिया (पृ 39)
(३९) साँझा	---	संझाोती (पृ 36)
(४०) दोपहरमें	---	दुपहरवे (पृ 70)
(४१) उसके	---	वोकरे (पृ 42)
(४२) पैरमें	---	पैरवा (पृ 22)
(४३) जायदाद	---	ज्यादाद (पृ 119)
(४४) एकछत्र	---	एकक्षात्र (पृ 72)
(४५) एहसान	----	अहसान (पृ 46)

लक्ष्मीनारायण लालके अँधाकुआँ नाटकमें लोकभाषाके अंतर्गत केवल "प्रतिध्वन्यात्मक (ध्वन्यर्थमूलक) शब्दरूप" और "तद्भव रूप" ही नहीं मिलते। साथही जनसामान्यके बीच प्रचलित मुहावरें और कहावतोंका भी काफी मात्रामें प्रयोग मिलता हैं।

मुहावरें और कहावतें लोकभाषाके प्रभावी अंग होते हैं। जनसाधारण अपनी भावाभिव्यक्तिके सहज बोधगम्य और स्पष्ट बनानेके लिए लोकभाषा के साथ साथ क्षणक्षणमें इनका प्रयोग करते दिखाई देते हैं। क्योंकि मुहावरें, कहावतें तो लोकके जीवन सत्योंसे जुड़े हुए होतें हैं।

इनके प्रयोगसे लोकभाषामें प्रवाह और सुबोधताका संचार होता होता है। साथ ही इनके प्रयोग का दूसरा लाभ यह है कि मुहावरें, कहावतोंके प्रयोगसे उक्ति चमत्कार बढ़ जाता हैं और सुननेवालेंपर इनकी सीधी चोट तो पड़ती है। साथ ही भाषामें एक तरहकी मिठास आती है।

इनका प्रयोग करनेके कारण वक्ताके भावोंका गांभीर्य बढ़ जाता है। इनका अपना सौंदर्य होता है।

लोकजीवन, लोकसंस्कृति व्यक्त करनेका लोकभाषा एक प्रभावी साधन है। उसके मुहावरें और कहावतें आवश्यक अंग हैं।

लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोकभाषा एक सबसे प्रमुख लोकतत्त्व है तो इसी लोकभाषाके अंतर्गत मुहावरें और कहावतोंका स्थान श्रेष्ठ हैं महत्वपूर्ण है।

सबसे पहले मुहावरा क्या है ? इसकी जानकारी लेना है।

मुहावरा --- अर्थ---(१) (पु.) किसी विशिष्ट भाषामें प्रचलित वह वाक्य अथवा पद जिसका अर्थ लक्षणा या व्यंजनासे निकलता है। वह अर्थ जो शब्दोंके प्रत्यक्ष या शाब्दिक अर्थसे भिन्न और विलक्षण हो।" [1]

(२) शब्दों या क्रिया प्रयोगोंके योगसे कुछ विशिष्ट पद बन जाते हैं। जो मुहावरे कहलाते हैं।

---

(१) प्रामाणिक हिन्दी कोश --- पृ. १०४८ --- रामचंद्र वर्मा

(१) मुहावरा "उस गढे हुए पदको कहते है जिससे कुछ विशिष्ट लक्षणाजन्य अर्थ निकलता है।

थोडेमें "मुहावरा", बननेके लिए भाषा, वाक्य या पद, शब्द या क्रिया, लक्षणा या व्यंजना की आवश्यकता होती है।

मुहावरा" शब्दकी उत्पत्ति-- मुहावरा" यह शब्द अरबस्तान का है। बादमें भारतने इसे अपनाया इसलिए भारतमें "मुहावरा" इस शब्दके लिए कोई देशी शब्द नहीं है।

प्राचीन जमानेसे हमारे यहाँ शब्दकी तीन प्रकारकी शक्तियाँ मानी गयी है। (१) अभिधा। (२) लक्षणा। ३) व्यंजना।

तत्वत: मुहावरा लक्षणा, व्यंजनाके अंतर्गत आता है।

मुहावरा" शब्दके पहले हमारे यहाँ अपना मत, विचार अभिधासे नहीं बल्कि व्यंजना, लक्षणा व्दारा बताया जाता था। याने इनका अस्तित्व तो था पर नाम मालूम न था कि ये ही मुहावरें हैं।

संस्कृतमें भी मुहावरा" शब्दके समानार्थी शब्द, संज्ञा नहीं मिलती। यथा "वाग्रीति", रमणीय प्रयोग" जैसे शब्दोंके रुढ न होनेपर भी, नामाभिधानके न होनेपर भी, जनसमूह इसका इस्तेमाल तो करता ही था।

लोकतत्त्वोंमें पगपगपर मुहावरोंका प्रयोग मिलता है। इसका स्त्रोत लोकमानस है।

वैसे अरबी भाषासे आनेवाले इस शब्दमें कुछ सौकर्य है क्योंकि अरबीमें मुहावरा इस शब्दका अर्थ है, "परस्पर बातचीत" या "सवाल जबाब" करना।

भारतमें अन्यान्य देशोंकी अपेक्षा कहीं अधिक और व्यापक दृष्टिसे मुहावरेका प्रयोग मिलता है। इस संदर्भमें रामचंद्र वर्माजीका कथन उल्लेखनीय है। " आजकल जिसे मुहावरा या Idiom कहते है। वह तत्व हमारे लिए बहुत कुछ नयाऔर परकीय है। हम यह तो माननेके लिए तैयार नहीं है ~~बब=बब=लोके=बकब=~~ कि यह तत्व ~~हमने~~ हमने उर्दूसे ग्रहण किया है क्योंकि उर्दूके प्रचारसे बहुत पहले हमारे यहाँ मुहावरे बनते, चलने लग गये थे। पर हाँ मुहावरा" शब्द हमने अवश्य बाहरसे लिया है।" [१]

और फिर यदि अपने यहाँ, जबतक कोई उपयुक्त शब्द नहीं मिलता तबतक मुहावरा" शब्द भी चलाते हैं। तो यह भी कोई कलंक या लज्जाकी बात नहीं है। भाषामें तो इस तरह की लेन देन चलती ही रहती है। इस दृष्टिसे मुहावरा" शब्दके हम ऋणी तो जरूर है। वैसे मुहावरा यह शब्द जैसे कि पहले गया है, हमारे लिए बहुत कुछ नया, परकीय जरूर है। भालेही इसका बाहय कलेवर विदेशी क्यों न हो, पर इसकी मिट्टी, आत्मतत्व तो पूर्ण रूपसे भारतीय ही है।

इसमें कोई संदेह नहीं है।

मुहावरे की परंपरा, व्यापकत्व तथा विशेषताएँ ----

एकही वाक्यमें कहे तो मुहावरोंका इतिहास भी उतनाही प्राचीन है, जितना बोलोकी उत्पत्तिका। संस्कृत साहित्यमें इनका प्रचुर मात्रामें प्रयोग उपलब्ध होता है। फिर भी उससे प्रारंभिक अवस्थामें लोककी जबानपर इनका अस्तित्व तो निःसंशय था ही।

लोक जीवनका कोई ऐसा कार्यक्षेत्र नहीं जिसके वर्णनमें मुहावरोंका प्रयोग न होता है।

---

(१) अच्छी हिंदी ----- रामचंद्र वर्मा --- पृ० १९५०

हजारों वर्षोंसे बोलचालमें बार बार आते रहनेसे मुहावरें मनुष्य जीवनके उसमें भी विशेषत: लोकजीवन के साथी बन गये हैं। जन साधारण भावाभिव्यक्तिके लिए मुहावरोंकी शरण लेता है। क्योंकि उसे जो कुछ भाव प्रकट करना है वह मुहावरे का आधार लेकर सहजतया कह पाता है।

मुहावरे की विशेषताएँ

(१) आंतरिक विशेषताएं। (२) बाहय विशेषताएं।

(१) आंतरिक विशेषताओंसे तात्पर्य यह है कि मुहावरोंका वाक्यमें प्रयोग करनेसे पहले, करते समय कौन कौनसी सावधानियां बरतनी पडती है। तथा

(२) बाहय विशेषताओंका मतलब यह है कि मुहावरे का वाक्यमें प्रयोग करनेपर जीवनका कौनसा चित्र मिलता है ?

" मुहावरोंकी सबसे पहली आंतरिक विशेषता यह है कि वाक्यमें इसकी कोई स्वतंत्र सत्ता-अस्तित्व नहीं होता। बल्कि मुहावरा किसी वाक्यका अंगीभूत बनकर रहता है। जबतक किसी वाक्यमें प्रयोग नहीं होता तबतक इसका कोई अस्तित्व नहीं, अर्थ नहीं।

(२) मुहावरा अपने मूल रूपमें ही प्रयुक्त होता हैं। इसके समानार्थी शब्दोंका प्रयोग करना याने इसके मूलपर, अस्तित्वपर कुठाराघात करना है।

(३) मुहावरे का वाच्यार्थसे, अभिधा शब्दशक्तिसे विशेष संबंध नहीं होता। लक्ष्यार्थ अथवा लक्षणा व्दारा ही अभिष्ट अर्थकी सिद्धी होती है।

(२) बाह्य विशेषताएँ ---- मुहावरोंकी बाह्य विशेषताओंमें महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे लोकजीवन की झाँकी मिलती है। सामाजिक प्रथाओं, रुढियों और परंपराओंका उल्लेख अनायास पाया जाता है। इतनाही नहीं आर्थिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दर्शन इनके व्दारा होते हैं। इन सबका परिचय मुहावरों व्दारा होता है।

अपनी बातको जीवंत प्रभावात्मक तथा रोचक बनानेके हेतु इनका प्रयोग होता है। लोकमें यह प्रयोग तो अनजानेमें ही किया जाता है, तथा हो जाता है।

मुहावरें तथ्यको थोडेमें कहनेमें समर्थ होते हैं। वे चुस्त, अर्थवादी तथा परिणामकारक भी होते है। प्रयत्न लाघव, मुखसुख और सुलभीकरण ये मनुष्यकी मूलभूत प्रवृत्तियाँ ही मुहावरेको जन्म देनेमें सहायक सिध्द होती है। थोडेमें इनमें "गागरमें सागर " भरनेकी क्षमता होती है। सबक स्वानुभूतिही उनकी आधारशीला होती है।

अंधाकुओंमें आए हुए मुहावरोंका एकके बाद एक देखनेकी अपेक्षा मैंने मुमावरोंका वर्गीकरण इस तरह किया है।

मानवके विभिन्न अवयवों संबंधी मुहावरें ---

इसके अंतर्गत ---

(१) सिर। (२) आँख। (३) जीभ। (४) दाँत। (५) मुँह।
(६) कान। (७) कंधे। (८) गर्दन। (९) गला। (१०) छाती।
(११) दिल। (१२) कलेजा। (१३) पेट। (१४) कमर। (१५) हाथ।
(१६) पैर। (१७) शारीरिक कृति संबंधी। (१८) पशुपंछी संबंधी।
(१९) विविध।

(१) सिर से संबंधी अंगाकुओंमें मुहावरें--निम्नलिखित हैं ----

(१) सिरसे टलना | (पृ ३२)

(२) सिरपर सवार रहना |(पृ ९२)

(३) सिर धुनना |(पृ ४१)

(४) सरपर खून चढना |(पृ ५९)

(५) सिरपर चढना |(पृ ६१)

~~(६) सिर तोडना | ४३~~

(६) सिर तोडना |(पृ ४३)

(७) सिरमें कितने बाल हैं ?(पृ ८८)

(८) खोपडी चाटना |(पृ ४१)

(९) दिमाग ठीक करना |(पृ २८)

~~(१०) दिमाग [illegible] | ([illegible])~~

(२) आँख --- संबंधी मुहावरोंकी संख्या भी प्रचुर मात्रामें देखनेको मिलती है |

(१) आँख फूटना |(पृ ६२)

(२) आँखोंमें धसना |(पृ ८८)

(३) आँख पसारकर देखना |(पृ ११४)

(४) आँखपर आँख न धरना |(पृ १५२)

(५) कोरव अंधी होना |(पृ १२८)

(३) जीभ-जबान तो मुहकी कुंजी है, जिससे वाणी खुलती है। अंधाकुआमें इस तरहके मुहावरें दृष्टव्य है ----

(१) जीभ निकलना । (पृ ७७)

(२) जबान खुलना । (पृ ३६)

(३) जबान सम्हालना (पृ ६१)

(४) जबान खिंचना । (पृ ५२)

(४) दाँत --- शब्दसे संबंधी मुहावरे अंधाकुआमें केवल दो ही हैं ---

(१) दाँत पीसना । (पृ ६४)

(२) दाँत गडाना । (पृ १४०)

(५) "मुह " संबंधी मुहावरोंका प्राचुर्य देखों ----

(१) मुहमें बत्तीस दांत होना। (पृ ६१)

(२) मुह तोडकर रखना । (पृ २५)

(३) मुह देखना । (पृ ७७)

(४) मुहमें दही जमा रखना। (पृ ८९)

(५) मुह भर देना । (पृ १३०)

(६) मुहसे बात न निकलना। (पृ १४६)

६) कान --- संबंधी मुहावरें दो ही है -----

(१) कान खोलकर सुनना । (पृ ९८)

(२) कान फाडके सुनना । (पृ १४८).

(७) कंधा --- (१) कंधेपर चढकर हार फूंकना | (पृ १७)

(८) गर्दन --- (१) गर्दन नापना (पृ ७१)

(९) गला -- (१) गला फाडना | (पृ ११५)

(१०) छाती --- (१) गज भर छाती होना | (पृ ६१)

(२) छाती ठंडी होना | (पृ २१)

(११) दिल --- (१) दिल का अरमान पूरा करना | (पृ २६)

(१२) कलेजा --- (१) कलेजा हाहाकार करना (पृ ५)

(२) कलेजा कंपना | (पृ २०)

(३) कलेजेपर पत्थर रखना | (पृ ११३)

(१३) पेट --- (१) पेट का पाप दूसरे के सर मढना / (पृ १३)

(२) पेट भरना | -- (पृ ५५)

(३) पेटमें साँस न होना (पृ ५५)

(१४) कमर --- (१) कमर टूटना | -- (पृ १३८)

(१५) हाथ --- (१) हाथ धरे बैठना (पृ ६)

(२) हाथ मलते रहना (पृ ६)

(३) दाए बाए हाथ का खेल | (पृ २६)

(४) खाली हाथ न जाना | (पृ २७)

(५) हाथसे निकलना (पृ ५५)

(६) बाँह उठाकर खाना | (पृ १३३)

(७) हाथ उठाना (पृ १४९)

(१६) पैर -- (१) पैर फैलाकर सोना (पृ १३३)
(२) पाँव न रखना (पृ १५०)
(३) पैर तुडवाना। (पृ ३६)
(४) पैर छूना (पृ १०९)
(५) पैर घिसना (पृ ५)
(६) सिरसे पैरतक घृणा करना (पृ १३४)
(७) पाँव दबाने जाना (पृ १४)
(८) एक कदम आगे न रखना (पृ १२३)

(१७) शरीरके कार्य संबंधी मुहावरें ----

(१) तबीयत बहलनी। (पृ १२०)
(२) नसनस पहचानना (पृ २४)
(३) खाल खिंचना। (पृ ३१)
(४) खून गलना। (पृ १४२)
(५) गौहरी दौडना (पृ १४)
(६) खिसक जाना (पृ १८)
(७) दम लगाना (पृ १५)
(८) सुखाकी नींद सोना (पृ ४९)
(९) तमाशा देखना (पृ २४)
(१०) चुगली करना (पृ ९८)
(११) माया दिखाना। (पृ ११०)
(१२) नजारा मारना (पृ २३)
(१३) अपनी जगह रोना (पृ २०)
(१४) नशा चूर होना। (पृ ९५)
(१५) तिनका न हिलाना (पृ १३)
(१६) देहचूता -- देह उंडा (पृ २८)
(१७) फिराकमें रहना (पृ १०२)

(१८) पशु पक्षी संबंधी ----

(१) छिपकली चढना (पृ. ८)

(२) भैंस की तरह खाना (पृ १३)

(३) घोडा बेचकर सोना (पृ १९)

(४) बिच्छूके डंख मारना (पृ २४)

(५) उल्लू बनाना (पृ ३१)

(१९) विविध ----

(१) आकाशसे गिरना (पृ ४४)

(२) दाल न गलना (पृ ९०)

(३) रत्तीभार कसूर न होना (पृ ६०)

(४) नानी मरनी (पृ ७१)

(५) तीन के तेरह ~~बनाना~~ करना (पृ ६६)

(६) पुतला टांगना (पृ ५७)

(७) वज्र गिरना (पृ ७५)

(८) दरवाजेसे लगना (पृ ३४)

(९) पानीमें आग लगाना (पृ २३)

(१०) छप्परपर रखना (पृ १०)

(११) तार तार करना (पृ ९)

(१२) चौकडी भूलना (पृ ८)

(१३) दरवाजा झांकना (पृ ५)

(१४) आग लगाना (पृ ५)

(१५) राईसे पहाड होना (पृ ३१)

(१६) पुतला टांगना (पृ ६७)

(१७) दुहाई देना (पृ २३)

(१८) आगापीछा न सोचना (पृ ४४)

(१९) भूतोंका डेरा बनाना (पृ १७)

(२०) तिनकेसे न मारना (पृ १८)
(२१) तिलभर लाज शरम न होना (पृ २९)
(२२) लाल पीला होना (पृ ४१)
(२३) कुआँ इनारा देखना (पृ ४९)
(२४) रत्ती रत्ती जानना (पृ ३७)
(२५) बातको तिलभर मेलना (पृ ९१)
(२६) झख मारना (पृ ८५)
(२७) खोर चाटना (पृ ७९)
(२८) खोज खबर लेना (पृ १००)

इन उदाहरणोंकी नींव में भी तत्सम शब्दोंकी ही तरह मुखासुख, सरलीकरण तथा काठिन्यसे सरलताकी ओर जानेकी प्रवृत्ति विद्यमान है।

कहावतें :-- लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोकभाषाका और लोकभाषाके अंतर्गत मुहावरों और कहावतोंका वर्णन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है क्योंकि ये भी लोकतत्त्व ही है। ये किसी भाषाका भूषण ही नहीं, बल्कि प्राण होते हैं। जिसके प्रयोगसे वक्ताके कथनमें -- अभिव्यक्तिमें एक विशेष बल आ जाता है। इन कहावतोंके संबंधमें, पहले हम प्राथमिक जानकारी लेंगे और बादमें अथाकुओंकी कहावतोंको देखेंगे।

कहावतकी व्युत्पत्ति एवं परिभाषा-- बड़े आश्चर्य की बात है कि जहाँ मुहावरें के लिए हमारे यहाँ एक भी शब्द नहीं है वहाँ कहावत के लिए अनेक शब्द मिलते है। कहावतोंकी परंपरा अत्यंत प्राचीन है।

कहावत " शब्दकी व्युत्पत्तिके संबंधमें विद्वानोंमें बहुत अधिक मतभेद है। कहावतका दूसरा नाम है लोकोक्ति।

(१) कहावत " शब्दकी व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द "कथावत्" से हुई है।
(२) कह + आवत् " अर्थात् जिसके कहनेकी सुदीर्घ परंपरा हो। " [१]

डा॰ सिद्धेश्वर वर्माके मतानुसार हिन्दी शब्द "कहावत" का अभिधेयार्थ उक्ति है। इसकी व्युत्पत्ति हिन्दी "कहना" से हुई है। जिसके आगे दो प्रत्यय जुड़े हैं। (१) आव" जैसा कि सुझावमें देखा जाता है उदा॰ कहाव।

(२) कहाव + अत" प्रत्यय कहावत की संक्षिप्तता और सारगर्भिता का सूचक है। " १

विभिन्न विद्वानोंके जो मत ऊपर उद्धृत किए गये हैं, उनसे कोई ऐसा निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता जिसके संबंधमें निश्चयपूर्वक कुछ कहा जा सकता हो कि कहावत की व्युत्पत्ति निश्चित रूपसे यही है।

वस्तुतः बात यह है कि भाषा पहले बनती है और व्याकरण बादमें। अतः व्याकरणके नियमोंसे प्रत्येक शब्दके संबंधमें अंतिम निर्णय नहीं किया जा सकता। कि इसका निश्चित यही अर्थ है। और कहना भी नहीं चाहिए क्योंकि भाषा का प्रवाह तो बहता रहता है। इसमें प्रारंभिक रूपमें न जाने कितनी छटाएं मिली गयी होंगी और आगे मिलनेवाली है। इस तरह की वास्तविकताको स्वीकार करनेपर भी व्युत्पत्ति का आश्रय लेकर निकट संभावनाओं तक तो पहुंचा जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचनके आधारपर कहावत की व्युत्पत्तिके संदर्भमें दो संभावनाएं उभरती है —

(१) कहावत " शब्दकी व्युत्पत्ति संस्कृत शब्दसे हुई है।

(२) कहावत " सुदीर्घ परंपरासे कही जानेवाली। ऐसा उसका अर्थ बोध कराती है।

UNIVER

कहावतकी रचना --- प्रक्रिया ---"लोकतत्वों। ३। ११८
लोकोक्तियोंके (कहावतें) अनाम रचयिता होते हैं। कोई भी उक्ति तभी लोकोक्ती या कहावते का नाम धारण करती है। जब लोकमानसकी छाप उसपर अंकित हो जाती है। लोक ह्दय उस उक्तिके साथ तादात्म्य स्थापित कर देता है। अत: किसी उक्तिको, लोकोक्ति कहावत बनानेमें एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियोंका हाथ नहीं रहता समस्त लोक उसे लोकोक्ती का रूप देनेमें अपना योगदान देता है। " [१]

समस्त लोककी उक्ति ही लोकोक्ति है, यही अर्थ कहावतमें भी निहित, अभिप्रेत, अव्याकत रहता है।

कहावत की परिभाषा एवं स्वरूप -यों तो किसी भी साहित्य विधाको परिभाषाके चौखटेके अंदर बंद नहीं किया जा सकता और न उस परिभाषामें पूर्ण वैज्ञानिकता ही आ सकती है। परंतु फिर भी परिभाषाका इतना तो उपयोग है ही कि उससे परिभाषित वस्तुके स्वरूपका स्पष्टीकरण अवश्य हो जाता है। इसी लक्ष्यको दृष्टिमें रखकर कहावत को परिभाषित करनेका प्रयास किया जा रहा है।

आर॰ सी॰ ट्रेंचने "संक्षिप्तता, सारगर्भिता और सजीवताको कहावतके तीन अनिवार्य तत्वोंके रूपमें ग्रहण किया है। " [२]

"संक्षिप्तता, सारगर्भिता और सजीवता इन तीन गुणोंके होते हुए भी कोई उक्ति कहावत कही जा सके, यह आवश्यक नहीं, क्यों कि उस उक्तिको कहावत नाम तभी मिलेगा जब उसे लोक स्वीकृति भी प्राप्त हो जाए। " [३]

अत: इन तीन गुणोंके साथ लोकग्राह्यता नामक चौथा गुण जोड दिया जाए तो उपर्युक्त परिभाषा कहावत के रूपको अधिक स्पष्ट करनेमें समर्थ हो सकती है।

ऑक्सफर्ड डिक्सनरीमें कहावत की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि ---- जनतामें प्रचलित कोई छोटासा सारगर्भित वचन, अनुभव अथवा निरीक्षण द्वारा सबको ज्ञान किसी सत्यको प्रकट करनेवाली कोई संक्षिप्त उक्ति कहावत है। इस परिभाषाको पर्याप्त मात्रामें पूर्ण माना जा सकता है। क्योंकि कहावतके प्राय: सभी पहलूओंको इसमें समेट लिया गया है। फिर भी इसमें एक और तत्व छूट गया है और वह है सप्राणता (चटपटापन) जो अनिवार्य रूपमें रहती ही है।

इसलिए डा॰ वासुदेव शरण अग्रवालने लोकोक्ति (कहावत) के संबंधमें कहा है --- (लोकोक्तियाँ) कहावतें मानवीय ज्ञानके चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं। साथ ही कहावतोंकी प्रसंगानुकूल उपयुक्तता यह एक विशेष तो होता ही है।

उपर्युक्त विवेचनके आधारपर संक्षेपमें कहावतका स्वरूप इस रूपमें उभरता है। संक्षिप्तता, सारगर्भिता और सजीवतासे युक्त जनजनके कंठपर विराजमान प्रसंगानुकूल चुभती हुई लोकोक्ति अथवा कहावतकी संज्ञा प्राप्त करती है।

कहावतोंको ज्ञानकी पिटारी कहा जा सकता है।

"कहावतें ग्रामीण जनताके लिए न्यायशास्त्रका कार्य करती है। विषमसे विषम परिस्थितिमें मनुष्यको क्या करना चाहिए। इसके लिए वे निर्णय देती हैं। वे अपने आपमें दलील होती है। ऐसी दलील जिसके आगे किसीकी कुछ चलेही नहीं सभीको हार माननी पडती है। कहावती न्यायालयमें निर्णय हो जानेके बाद उसकी कहीं कोई अपील नहीं हो सकती। कहावतने जो निर्णय देदिया वही अंतिम है। किसी तथ्यकी प्रामाणिकताका कहावतसे बडा कोई प्रमाण नहीं समझा जाता है।" १

तथा कहावतोंमें कल्पनाका आश्रय नहीं लिया जाता। सच्चाई इनकी आधारशिला है। इनमें निरीक्षण और अनुभवोंका निचोड होता होता है। इनमें लोकजीवनका चित्रण उपलब्ध होता है। वर्ण्यविषय समस्त मानव जीवन है। इन कहावतोंका आकार तो छोटा होता है। पर इनमें विशाल भाव सिमटा रहता है। ये कहावतें बडी सरल भाषामें निबद्ध होती हैं। कहावतें गद्यमें और पद्यमें हुआ करती है।

मुहावरा और कहावतमें साम्य तथा भेद ---

तो गाँवोंमें लोग

साम्य —— मुहावरे और कहावतोंका उपयोग

फिरते, उठते-बैठते कर देते हैं। अपनी बातकी पुष्टी परिहासपूर्ण कटाक्षके लिए प्राय: इन कथनोंका प्रयोग किया जाता दोनों मानव व्यवहारको समेटते हैं। जीवनके सभी रंगोंमें रंग भर दे मनुष्य स्वभावके विविध पहलूओंपर रोशनी डालनेकी दोनोंमें क्षमता बेजोड हुआ करती है। दोनोंके मूलमें परंपरा विद्यमान रहती है। और साथ ही दोनोंकी परंपरा भी अत्यंत प्राचीन है। भाषामें सौंदर्य वृद्धिके साथ भावाभिव्यक्तिके दोनों साधन हैं। दोनोंकी नींव अनुभव हैं। और सच्चाई आधारशिला है। दोनोंकी लोककी कसौटीद्वारा अग्निपरीक्षा होती है। मानव जीवनको उपदेश, शिक्षा, कर्मपोषण और सूचना देना दोनोंकी मंजिल हैं। साथही व्यंग्य-विनोद द्वारा समाज सुधार तथा मानव जीवनका मार्गदर्शन करना। दोनों किसी व्यक्ति विशेष की उक्ति न होकर सारे मानव समाजकी उक्ति हैं। दोनोंका स्थान लोकतत्वोंके अंतर्गत आता हैं। दोनों अलग-अलग दिखाई देनेपर भी दोनोंका अंतरंग तत्व एक ही हैं। दोनों नमककी तरह आवश्यक हैं। मुहावरों और कहावतोंद्वारा उडाया गया उपहास प्राय: कटु, हो सकता है। किंतु इनका अभिप्राय गाली देना नहीं, बल्कि खिल्ली उडाना होता हैं। सामान्यत: ये

पापीसे नहीं, पापसे घृणा करते हैं। तथा हानिप्रद होनेकी अपेक्षा आनंदयुक्त अधिक होते हैं। दोनोंमें प्रयत्नलाघव, मुख सुख और सुलभीकरण की प्रवृत्ति इनके जन्मके कारण हैं। दोनों भावाभिव्यक्तिका साधन है। कहावतोंकी तरह मुहावरे भी वाच्यार्थ नहीं ग्रहण करते। बल्कि उससे मिलता जुलता अर्थ लिया जाता है। दोनोंमें लोकतत्त्व हैं। अब तक हमने मुहावरों तथा कहावतोंका साम्य देखा। अब हम मुहावरों और कहावतोंका भेद देखने जा रहे हैं ----

: मुहावरा और कहावतोंका अंतर :

मुहावरा।	कहावत।
(१) "मुहावरा" शब्द परकीय, समानार्थी शब्द नहीं मिलता।	(१) "कहावत" शब्द भारतीय लोकोक्ति समानार्थी शब्द है।
(२) इसकी वाक्यमें स्वतंत्र सत्ता नहीं है। मुहावरा वाक्यांश होता है।	(२) इसकी वाक्यमें स्वतंत्र सता होती है। कहावत पूर्ण एक वाक्य होती है।
(३) व्यंजना, लक्षणाकी नींवपर मुहावरेका भवन खडा रहता है। विशेषत: लक्षणाकी प्रधानता होती है।	(३) अभिधासे आशय व्यक्त न करके किसी अलंकार, उपमा उत्प्रेक्षा, दृष्टांतकी साडी पहनायी जाती है। खासकर व्यंजनाकी प्रधानता होती है। कहावत क्रियाके रूपमें वाक्य नीही चाहिए। ऐसा कोई

मुहावरा और कहावतोंका अंतर :

मुहावरा।	कहावत।
(५) मुहावरेका केवल क्रिया मात्रासे संबंध होनेके कारण कहावतकी तुलनामें मुहावरा प्राय: आकारसे छोटा होता हैं। मुहावरेका कार्यक्षेत्र सीमित होता है। मुहावरा एक छोटासा फूल है। उदा०घर फुंकवाना, तमाशा देखना।	(५) कहावतका घटनासे संबंध होनेके कारण मुहावरेकी तुलनामें कहावत प्राय: आकारसे बडी होती है। कहावतका कार्यक्षेत्र विशाल होता है। कहावत एक कमल है उदा० घरमें लगे आग, गाँव खोले फाग। न रहे बाँस न बजेगी बाँसुरी।
(६) कहावतकी तुलनामें मुहावरा बहुत बडा आशय व्यक्त नहीं करता।	६) चंद शब्दोंमें बहुत बडा आशय कहावत व्यक्त करती है।
(७) मुहावरा यथार्थ को स्पष्ट करते वक्त गुप्तता रखता है। उदा० दाँत पीसना, आँचल सम्हलना।	७) कहावतका यथार्थ नग्न रूपमें प्रकट होता है। उदा० घरका भेदी लंका ढाहे, पूतसे बैर पतोहूसे नाता।
८) मुहावरा बोली की देन हैं।	८) कहावत भाषाकी देन है।

अबतक हमने लोकतत्वोंके अंतर्गत लोकभाषा, मुहावरें कहावतें आदिके संबंधमें जानकारी ले ली। अब अंधाकुआँमें आयी कहावतोंको देखना है।

अंधाकुआँमें मुहावरों और कहावतोंका एक छोटासा कोश हमारे सामने लेखकने खोलके रखा है।

इन कहावतोंके पीछे भी सरलीकरण, मुखसुख तथा काठिन्यतासे सरलताकी ओर जानेकी प्रवृत्ति विद्यमान है।

अंगाकुआँ की कुछ कहावतें प्रस्तुत है।

(१) तनकी गोर ही, मखमलका भगावा (पृ९)
(२) मीठा मीठा गप्प, कडुवा कडुवा थू (पृ १०)
(३) न रहे बांस न बजे बांसुरी (पृ२६)
(४) मुँहकी लगी डोमडी गावे ताल बेताल (पृ२७)
(५) बाडी विस्तुइया बाघाको नजारा मारे, मारते सुसर तेरी (पृ ६४)
(६) मर-मर करे बैलवे, बैठे खाय तुरंग (पृ ३०)
(७) जो न मरी तू काटे कीरा, तो तू मरो सौत के पीरा (पृ८१)
(८) घरका भेदी लंका ढाहे (पृ ९०)
(९) पूतसे बेर पतो हूसे नाता (पृ ९१)
(१०) न उधो की लेने, न माधो की देने (पृ १०१)
(११) जदपि सुधा बरसे, जलद फूले फूले न बेंत (पृ१०२)
(१२) रुई न सूत जोलाहोंमें लडाई (पृ ११२)
(१३) जहाँ गयी डाढो रानी, तहाँ पडा पाथर पानी (पृ११३)
(१४) चलनेको दम नहीं, रजाईका फाड बाँटू (पृ१०२)
(१५) जलमें रहकर मगरसे बैर (पृ ११४
(१६) अपनी अपनी ढफली अपना अपना ताल (पृ १२६)
(१७) घर-दुवार भाउजीके, ननदीके लबलब (पृ ६२)
(१८) बडी मिठाईमें कीयाँ पडता है (पृ१५०)
(१९) दूधकी जली बिलार माठा फूँक-फूँककर पीती है (पृ१०४)
(20) रस्सी जल गयी लेकिन ऐंठन न गयी। पृ.(५८)

इस तरह नाटकके दो पात्र आपसमें बातचीत करते वक्त, अभिव्यक्तिके समय अनायासही कहावतोंका प्रयोग करते हैं। इस तरह कहावतें लोकमें एकाकार हो गई हैं। नाटकमें मुहावरोंकी तरह कहावतोंका क्षेत्र भी विशाल है।

इसलिए कहा जाता है कि लक्ष्मीनारायण लाल भाषाके किसान है। यह उपर्युक्त उदाहरणोंके आधारपर सही लगता है।

धाकुआँमें लोकभाषा, मुहावरें कहावतें ये लोकतत्त्व समर्थ है, सक्षम है। इनमें दोराय नहीं हो सकती। लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोकभाषा, मुहावरें, कहावतोंके साथ साथ अश्लील तत्त्व याने गालियोंका भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। शंभूसिंहने " रांगेय राघव और आंचलिक उपन्यास" में इस तरह नामकरण किया है ------

" अश्लील तत्त्व की सफल अवतारणा: गालियाँ।" [१]

साथ ही कृष्णदेव उपाध्यायने गालियोंका महत्त्व इस तरह बताया है-->

"गाँवके लोग अपने दैनिक व्यवहारमें गालीका प्रयोग प्रचुर मात्रामें किया करते हैं। अत: मौखिक साहित्यके अंतर्गत गालियोंकी चर्चा अत्यावश्यक है। इन गालियोंमें समाजकी अनेक प्रथाओंका उल्लेख यत्र तत्र पाया जाता है।" [२]

उपर्युक्त कथनके आधारपर धाकुआँ नाटकमें गालियाँ अथवा अपशब्दोंका परीक्षण करना है।

आलोच्य नाटकमें पात्रोंके संवादोंमें अश्लील तत्त्व = अपशब्द गालियोंकी अवतारणा हुई है। परंतु वे अश्लील तत्त्व पाठकको खटकते नहीं है क्योंकि इसमें चित्रित परिवारके सदस्य या बाहरके लोग-असभ्य-अनपढ़-गँवार है। उनके मुखमें अक्सर गालियाँ होती ही है। क्योंकि निम्नसमाजमें अपशब्द-गालियाँ बिना हिचकिचाहट के प्रयोगमें लाता है। और कभी औरते भी आदमियोंकी तरह गालियाँ-अपशब्द निकालती है। अपशब्द कहना गालियाँ देना अयोग्य, अनुचित है, ऐसा उन्हें नहीं लगता। क्योंकि निम्नसमाज अपने शरीरपर सभ्यताका आवरण चढ़ाना नहीं चाहता। जो कुछ भी हो वह सब स्पष्टत: होता है, बिना झिझकके होता है। उसके लिए लोकभाषा, मुहावरें, कहावतें और गालियाँ भी अपवाद नहीं है।

इस तरह गालियोंका-अशब्दोंका इस्तेमाल ये लोग इसलिए करते होंगे कि जो विरोधी होता है। उसका विरोध, उसके बारेमें क्रोध, व्यक्त करनेका एक सुलभ, उपयुक्त साधन उनकी दृष्टिमें गाली ही है। कभी कभी गालियोंका स्वरूप बहुत ही भद्दा-कुरूप होता है। जिसे साधारण व्यक्ति अपने मुखपर लाना नहीं चाहता। लेकिन यह सब लोककी प्रवृत्ति होनेके कारण लोकतत्वोंके अंतर्गत गालियोंका-अशब्दोंका समावेश मैंने किया है कि ये मौखिक ज्ञानके अंतर्गत आती है।

धाकुआ नाटककी, गालियोंका स्वरूप देखनेपर हम इस निष्कर्षपर आते हैं कि इस नाटककी गालियोंका स्वरूप इतना भद्दा नहीं है जिससे उसे हम निंदनीय कह सके।

परिवार और लोककी स्थितिको ध्यानमें रखनेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि गालियोंका अशब्दोंका प्रयोग अत्यंत स्वाभाविक स्थितिमें यथार्थ रूपमें ही इनका प्रयोग धाकुआ नाटकमें हुआ है। ऐसी गालियां, अशब्द लोकका सच्चा चित्रण, प्रवृत्ति को जाननेमें भलीभाँति सहायक हो गई है। इस तरहका प्रयोग लाल न करते तो शायद कृति अयथार्थ हो जाती।

धाकुआमें विविधपात्रोंद्वारा प्रयुक्त की गई कुछ गालियां अशब्द निम्नस्थ है ----

(१) भागौती= तुम सुकियाको गऊ कहते हो उस डायनको गऊ (पृ ५)
(२) भागौती = चुड़ैल, यहां क्यों आई (पृ १७)
(३) दूसरी औरत = बडी मुंहजोर है। अब जाकर ढूंढती क्यों नहीं ?(पृ ५०)
(४) मूरत = फोड दो इसकी आँख, बेहया, कहीं की (पृ ५२)
(५) सूका = बेहया -बेशर्म तुम तुम्हारी सात पीढी (पृ ५२)
(६) सूका = अब मौका मिला है, चोर कहीं का (पृ ७३)
(७) लच्छो = वह दाढी जार भाग गया कि नहीं ? (पृ ११९)

(८) सूका = गया काला नाग । (पृ ११९

(९) सूका = मुँहझाँसी कहींकी, आज गुड मांगने चली है । (पृ १३१)

(१०) भागौती = क्या करेंगी ये जुकमुँही रखकर । (पृ १३६)

(११) नंदो – कलकत्ता, कानपुर तो मरतुआके पाँव तले रहते हैं (पृ १४०)

(१२) राजी = अब नहीं दिखाई पडते मुँहझाँसे । (पृ १४२)

(१३) भागौती = क्या करता है भागवान तेरे लिए, उल्लू कहीं की (पृ १५२)

(१४) सूका = बोल, दाढीजार का पूत, यहाँ तू क्यों आया ?
नामर्द कहींका । (पृ १५५)

(१५) भागौती = मार मार शैतानको । (पृ १५६)

एक अलग तरहकी गाली निम्नस्थ है – जो संपूर्ण नाटकमें एकमात्र भद्दी, अश्लील गाली के अंतर्गत आती है ।

(१६) भागौती = अलगूसे कहना, तेरे बिना उसे नींद नहीं आ रही है (पृ १३७)

आदि उदाहरणोंको देखकर हम इस निष्कर्ष तक सहजतया पहुंच पाते हैं कि "लोक" का और गालियोंका, अपशब्दोंकी निकटका संबंध है । इस अध्यायमें लोकभाषाके, अंतर्भूत मुहावरें, कहावतें और गालियाँ (अपशब्द) ये विभिन्न लोकतत्त्व अंगोंके आधारपर देखें ।

. . . .

: चतुर्थ अध्याय :

: धाकुआ और लोकरूढि तथा लोकविश्वास :

लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोकरूढिका एक विशेष स्थान एवं महत्व होता है। " लोकरूढि "लोकविश्वास इस नामसे भी जानी जाती है, क्योंकि लोकरूढि शब्दके अर्थमें और लोकविश्वास इस शब्दके अर्थमें बहुत अधिक साम्य होनेके कारण ये दोनों पर्यायवाची शब्द के रूपमें सर्वत्र इस्तेमाल करते हैं।

लोकरूढि तथा लोकविश्वास इन शब्दोंका क्रमश: अर्थ= लोकरूढि याने लोककी रूढि, लोककी प्रथा, लोककी परंपरा। केवल परंपरा नहीं अंध-परंपरा का अर्थ अभिप्रेत है। लोकविश्वास याने लोकका विश्वास। यहाँ केवल विश्वास इस अर्थसे यह नहीं किया है तो अंधविश्वास-अंधश्रद्धा इस अर्थसे "लोक विश्वास" यह शब्द प्रयोगमें लाते है।

इस तरह हमने देखा कि लोकरूढि और लोकविश्वास ये अलग अलग शब्द नहीं है। इनका अर्थ एकही है। जो बिना सोचे समझे परंपराका पालन करते हैं, लोकरूढि, लोकविश्वास इन दोनोंकी सर्व व्यापकता, सर्वसमावेश--कता होती है। ग्रामीण और शहरी भागोमें भी इनका वर्चस्व दिखाई देता है। इसलिए इसका लोकतत्त्वके अंतर्गत समावेश करना स्वाभाविक ही नहीं अनिवार्य भी है।

लोकरूढि, (लोक विश्वास)के अंतर्गत अनेक रूपोंका, अंगोंका समावेश होता है। उदा· जादू होना, मंत्र-तंत्र, अंधविश्वास, अंध-श्रद्धा, भाग्यवाद, शकुन, अशकुन, रूढियाँ, परंपराएं और प्रथाएं आदि इसके अंतर्गत आते हैं।

महत्व = लोकका दैनंदिन जीवन इन उपर्युक्त लोकरूढियोंपर (लोकविश्वासोंपर) आधारित होता है। इन लोकरूढियोंको (लोकविश्वासकों) एक तरहसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होतीहै। थोडेमें लोकका जीवन लोक-

रूढियोंसे (लोकविश्वासोंसे) जकडा हुआ, बंधा हुआ होता है। लोक हररोज ही नहीं क्षणक्षण, पलपल, पगपगपर एक आँख लोकरूढीयोंपर (लोकविश्वा--सोंपर) रखकर चला करते है। और इसलिए लोकरूढियोंका (लोकविश्वासोंका) विरोध करनेकी या तोडनेकी हिम्मत इस लोकमें-जनसाधारणमें नहीं होती। इनका पर्याय नहीं है। इसके मुख्य तीन कारण मुझे दिखाई देते हैं/प्रथम यह कि जन्मसेही, बचपनसे प्रारंभसे इस लोकपर लोकरूढियोंके(लोकविश्वासोंके) संस्कार किए जाते हैं। और द्वितीय कारण यह है कि लोकरूढियोंका(लोकविश्वासोंका) आघात इतना जबरदस्त होता है कि केवल ग्रामीण, केवल साधारण ही नहीं बल्कि प्राय: यह भी देखा गया है कि शिक्षित लोग भी इनसे आक्रांत रहनेके कारण भावी अमंगलकी आशंकासे, भयभीत होकर वे इन लोकरूढियोंको (लोकविश्वासोंको) तोडनेमें समर्थ नहीं हो पाते हैं।

केवल ग्रामीण ही नहीं शिक्षित भी सहसा यह कहते हुए सुने जाते हैं कि प्राचीन कालसे चली आ रही इन लोकरूढियोंको, (लोकविश्वासोंको) तोडकर मैं ही सारा दोष अपने मत्थे क्यों लूं? शायद अनिष्ट की संभावना--से लोकरूढियोंकी शरण लेते हैं। इससे स्पष्ट है कि लोकमानवपर लोकरूढियोंका, (लोकविश्वासोंका) अखंड अधिकार होता है। इसलिए ग्रामीण के साथ साथ शिक्षित व्यक्ति भी इन लोकरूढियोंके, लोकविश्वासोंके पचडेसे निकल पाते हैं। उलटे लोकरूढि (लोकविश्वास) लोकजीवनमें इतने घुलमिल गये हैं कि लोकमानव इनके प्रति काफी विश्वस्त दिखाई पडते हैं। इनको स्वीकारनेका तीसरा कारण मुझे जरा मानसिक लगता है और वह यह कि किसी प्रकारकी हार, असफलता को छिपानेके लिए लोकरूढि, लोकविश्वास एक प्रभावी साधन इन्हें लगता होगा। किसी तरहका कार्य नहीं हुआ, तो सारा दोष लोकरूढियोंपर (लोकविश्वासोंपर) याने अपशकुन, मंत्र, तंत्र, जादू टोना, प्रथा, रीति, रिवाज, परंपराओंपर थोपकर खुद अलग हो सकते हैं।

उसी तरह अगर किसी काममें सफलता आयी तो लोकरूढियोंके (लोकविश्वासोंको) ही कारण आयी। इस तरह ये लोकरूढियाँ (लोकविश्वास) लोककी ढाल का काम अच्छीतरहसे कर सकती है। इसलिए लोकको ये प्राचीन जमानेसे आजतक प्रिय हैं और आगे भी बडी प्रिय लगेंगी।

थोडेमें सफलता, असफलतामें लोकरूढियों को (लोकविश्वासोंको) श्रेय दिया जाता है, और लोकरूढियोंका, लोकविश्वासोंका पहिया घूमता रहता है।

इस तरह लोकरूढियोंको (लोकविश्वासोंको) अपनाते तो हैं लेकिन इनमें सत्यका अंश होता है अथवा नहीं, यह निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता क्यों कि यह संपूर्ण विषय लोक से संबंधित है।

फिर भी इतना सही है कि लोकजीवनमें लोकरूढियोंका बहुत महत्व है। लोकमानव लोक रूढियों सदृश पर नीति वाक्योंके सदृश अनुसरण करता है और इनके विपरीत कुछ भी नहीं करता। इस तरह लोकरूढियाँ लोक का अंग बन गई है। यही सच्चाई है।

अंधाकुआँ में लोकरूढी (लोकविश्वास) लोकरूढीके अंतर्गत अनेक रूपोंका समावेश होता है। उदा॰ शकुन, अपशकुन, अंधविश्वास, मंत्र-तंत्र, जादू टोना, टोने-टोटके, भाग्य, प्रथा, रीति-रिवाज, आशीर्वाद विधि।

(१) "शकुन" = भारतीयता की आधारभूमी धार्मिकता रही है। यहाँका प्रत्येक संस्कार, उत्सव तथा अनुष्ठान ही नहीं, प्रत्येक कार्य में शकुन मुहूरत देखा जाता है। बहुतांश कार्य शकुन के अनुसार ही यहाँ प्रारंभ होते है। लोकमें "शकुन" का सर्वग्राही रूप लोकमें सर्वत्र देखनेको मिलता है। अंधाकुआँ नाटक इसमें भी अपवाद नहीं है।

धाकुआँ के अधिकतर पात्र "शकुन" लोकरूढि लोकविश्वास पर विश्वास के आधारपर चमकते हुए दिखाई देते हैं। प्रथम अंकमें शकुन नामक लोकरूढिको हम राजीके कथनसे प्रारंभ करते हैं ----

(१) अम्मा --- राजीका पति अलगू खेतसे बीज बोकर आता है, तब राजी कहती है ---- " लोक मुंह मीठा कर लो। "

अलगू == " क्यों क्या बात है ? "

राजी = " खेतमें धान की मूठ जो देकर आये हो। लो यह गुड दही है। (पृ. १५)

यहाँकी लोकरूढि यह है कि खेतमें धान की मूठ देकर आनेपर मुंह मीठा किया जाता है। इसे बडाही शकुन मानते हैं। इस लोकरूढिका राजीपर पूर्ण प्रभाव दिखाई देता है।

(२) लच्छी ---- " आज सप्तमी है न दीदी! पूर्ण मासी आजसे आठ रोज है, (उस दिन मंगल पडेगा दीदी! मंगल मेरे लिए बडा शुभ दिन है, दीदी! " (पृ. १०९)

भागौती की द्वितीय पत्नी लच्छी अपने मंगेतर के साथ भाग जाना चाहती है। उसे लगता है कि मंगल वार शुभ होनेके कारण वह भागनेमें सफल हो जाएगी। मंगलको वह शुभ दिन मानती है। यहाँ लच्छी की शुभ माननेकी लोकरूढि दृष्टयव्य है।

(३) सूका --- मै किसी तरह तुम्हारे लिए अच्छी साइत बिचारूँगी (पृ. ११०)

इसमें "साइत" इस शब्दमें शकुन नामन लोकरूढि हम देख सकते हैं। लच्छी अपने मंगेतरके साथ भागनेमें सफल होगी। इसका सूका शकुन देख लेनेवाली है।

(४) सूका --- अच्छा, तू अपनी माँग भार ले, आँखोंमें काजल कर लेना (पृ१२१)

लोकमें यह मान्यता है कि किसीके बाहरसे आनेपर जैसे शकुन हुआ करता है। ठीक उसी तरह जाते वक्त " माँग भारना " और " काजल करना " शुभाकारक होता है। इस तरह का लौकिक विश्वास सूका का है।

(५) सूका --- ये सब टिकुली तुम लगा डालना। माँ ने मुझे दिया था, मैं एक भी न लगा, सकी (पृ१२१)

घरसे बाहर जाते समय "माँग भारना ", "काजल करना" जैसे शुभ होता है उसी तरह " टिकुली लगाकर " जाना भी शुभाकारक होता है। सूकाने घरसे बाहर निकलते वक्त माँकी दी हुई टिकुली न लगानेके कारण सूका हर क्षेत्रमें उसे अपशकुन हुए ऐसा उसका कहना है।

(६) सूका --- " जिसने मुझे जानसे मार डालनेके लिए कौन-कौनसा जतन नहीं किया, आज मैं उसी को जिलानेके लिए क्या-क्या नहीं कर रही हूँ। यह जो उसीके लिए बीन रही हूँ। कल मंगल है, उसे सत न रायन बाबा की कथा सुनवाऊँगी। कौन जाने-पुन्य ही से वह अच्छा हो जाए।" (पृ.१३१)

भागोती जो इंदरके साथ मुठभेडमें मुंडेराके बाजारमें घायल हो गया और उसके पैरकी हड्डी टूट गई। वह सतनरायन बाबा की कथा और दान-पुन्य इस तरहके शुभाकारक कथासे उसके पति भागोतीका पैर अच्छा हो जाएगा इस तरहकी श्रध्दा-लोकरूढि सूकाकी है।

(७) अलगू ---" घबडाती क्यों हो, बाबूके पैर जल्दी ठीक नहीं हो, जायेंगे क्या! कल सतनरायन बाबा की कथा सुना दो। (पृ१३९)

सूकाकी ही तरह अलगूको भी ऐसा लगता है कि सतनरायन बाबाकी कथा सुनाना शुभकारक होता है जिससे भागौतीका पैर अच्छा हो जाएगा। ऐसी लोकरुढि सूकाकी ही तरह अलगू के भी दिलमें स्थिर है।

(८) भागौती ---- " अच्छा हो जाऊं, तुझे लेकर तीरथ करने जाऊंगा।"(पृ.१५१)

यहां भागौतीके स्वभावके संबंधमें हमने देखा है कि वो ईश्वरको माननेवाला नहीं है। फिर भी उसके मनमें तीरथ करनेकी शुभ कामना है। इसका पता चलता है।

इस उदाहरणसे हम इस निष्कर्षपर आते हैं कि ऊपरी तौरसे भलेही मनुष्य लोकरुढियोंके बारेमें तिरस्कार करता है। लेकिन दुष्टसे दुष्ट व्यक्तिके भी मनमें लोकरुढियों के लिए स्थान होता है इसलिए लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोकरुढियोंका अनन्य साधारण महत्व है।

(२) धनुकाओंकी व्दितीय लोकरुढि -अपशाकुन।

शकुनके लिए लोकके मनमें जो आदर होता है। उतनीही घृणा तिरस्कार अपशाकुन इस लोकरुढि के संबंधमें होती है। शाकुन शुभका प्रतीक होता है। तो अपशाकुन अमंगल, हानिका प्रतीक माना जाता है।

(१) मिनकू काका ---- "धार" क्या है, कसाई का खूँटा बना रखा है। (पृ.४)

यहां "कसाई" इस शब्दकी सहायतासे मिनकू काकाको यह कहना है कि धार को अपवित्र, अपशाकुनी बनाया है। मिनकू काकापर प्रारंभसे मौलिक यों कहे कि जन्मसे इस तरहके संस्कार हो गये हैं कि "कसाई" अपशाकुनी होता है। इस तरह मिनकू काकाके दिलमें अपशाकुन संबंधी लोकरुढि, लोकविश्वास बैठ गया है। इसी तरहके विचार अलगू व्यक्त करता हुआ कहता है।

(२) अलगू ---- "घर क्या है, भूतोंका डेरा बना रखा है। (पृ१७)

धोडेमें कसाई तथा भूत संबंधी लोकरूढि क्रमशः मिनकू काका और अलगूमें हम देख सकते हैं।

(३) भागोती ----" वह गऊ है ------ तुम सुकियाको गऊ कहते हो! उस डायन को गऊ।(पृ.५)

भागोतीकी दृष्टिमें भी " डायन " अशकुन संबंधी लोकरूढि ही है। इतनाही नहीं(१) चुडेल (२) छिपकली (३) घोरही (४) सुअर के लिए भी उसके दिलमें परंपरागत घृणा, दिखाई देती है।

(४) भागोती ---- " चुडेल यहा क्यों आई (पृ.७)

(५) भागोती ---" मेरी नजरसे इसे दूर हटा दो काका! इसे देखते ही मुझपर छिपकली चढ जाती है।" (पृ ८)

(६) भागोती ---- " बेहया कहीं की! बडी लाज ढकने चली। तनकी घोरही, मलमल का भगवा।" (पृ. ९)

(७) भागोती ---- "सुअर की बच्चीने मुझे घाट घाटका पानी पिलवाया है" (पृ. ११) तो अलगूको डोमडीमें अपशकुन लगता है।

(८) अलगू ---- यह जो नंदो है ..... यह तो और भी आसमानपर चढी रहती है। मुंहकी लगी डोमडी गावे ताल-बेताल।(पृ १७)

पति अलगूकेलिए बहन नंदो डोमडीकी तरह अपशकुनी लगती है तो उसकी पत्नि राजीके लिए ननद जहर की तरह अपशकुनी लगती है।यहा क्या डोमडी क्या जहर उन दोनोंका लोकविश्वास प्रकट होता है कि ये दोनों जीजे अपशकुनी है। इन दोनोंका नंदोमें समावेश हो गया है।

(९) राजी --- " जहर की बुलायी है। सारा काँटा यही लगाती है। (पृ५०)

अपशकुन का अगला रूप " बाँझ" के संबंधमें है।

(१०) राजी --- " जब कहा भी था, इस बाँझ को खिला पिलाकर क्या होगा। (पृ ५०)

यहाँ बाँझके प्रति देखनेका दृष्टिकोन स्पष्ट हुआ है। परंपरासे बाँझ की ओर हमारे यहाँ अशकुन के रूपमें देखा गया है। भागौतीका लोकविश्वास भी इसीकेअनुसार प्रकट हुआ है। बाँझ की तरह खाली घडा देखने, दिखानेसे अपशकुन होता है। ऐसा लोकविश्वास रूढ हैं।

(११) भागौती ---" हो जा न अलग, कौन खाली घडा दिखाता है। (पृ ६६)

अपशकुओंमें कुछ लोकविश्वास लोक के हैं तो कुछ लोकविश्वास वैयक्तिक दिखाई देते हैं। उदा॰ लच्छी के लिए मंगल दिन शुभकारक है तोसूकाके लिए अशुभकारक है।

(१२) लच्छी ----" उस दिन मंगल पडेगा दीदी। मंगल मेरे लिए बडा शुभ दिन है, दीदी। बोलो क्या सोच रही हो।" (पृ १०९)

सूका ---" लेकिन इस घरसे निकलने के लिए मंगल दिन अच्छा-दिन नहीं है। मंगल ही के दिन तो मैं भी इस घरसे निकलीं थी। (पृ १०९)

सूकाका यह वैयक्तिक विश्वास, अपशकुन संबंधी धारणा वैयक्तिक अनुभवके बलबूतेपर आधारित है।

तो "ब्रह्म" संबंधी लोकविश्वास को समाजका, लोकका आधार प्राप्त है।

(१३) सूका --- " लेकिन चढी लगन टूटी कैसे ? "

लच्छी ---" जबरदस्ती तोडी गयी दीदी, उसने माधोपुर कहलवा भेजा कि उसके द्वार ब्रहम है ।" (पृ ११०)

" ब्रहम" जैसे लोकविश्वास, लोकरूढिमें इतनी शक्ति है कि चढी लगन भी आसानीके साथ अशकुन होनेके भयसे तोडी जा सकती है ।

जिस तरह बाहर जाते वक्त माँग भरना शुभकारक होता है ठीक उसके विपरीत सूनी माँगसे बिदा देना उतनाही अशुभकारक माना जाता है । और इसलिए भले ही सूकाके मनमें अपने पतिके संबंधमें अधिक अच्छा मत न होनेपर भी लच्छी का कोई अशुभ, अशकुन न हो इसलिए हीराके साथ भाग जाते समय सूनी माँगसे जाने नहीं देती। और खुद भी सुहागन बनती है ।

(१४) सूका --- " मैं तुझे अपनी सूनी माँगसे नहीं बिदा नहीं करूँगी आज तेरे लिये मैं भी सुहागन बनूँगी। (पृ १२१)

एक अलग का लोकविश्वास लोकमें दिखाई देता है ।

सूका ---"लो परदेशी की माँ कहते हैं कि दूधमुँहें बच्चे को गोदमें लेकर नहीं रोना चाहिए ।" (पृ १३५)

यहाँ बच्चेको गोदमें लेकर रोना अपशकुन माना गया है ।

सूक्ष्मतासे देखनेपर और एक बात सामने आती है कि सूकाको वैसे मालूम है कि वह संतानहीन है --- भगौतीके शब्दोंमे वह बाँझ है। इसलिए बाँझका बच्चे को गोदमें लेकर रोनेसे किसी तरह कोई अनिष्ट हो न जाये । फलस्वरूप सूकाके सरपर ही उसका सारा दोष चढनेकी संभावनाको ध्यानमें लेकर बच्चा वापस करती है।

धाोडेमें लोकविश्वासोंके पीछे किस तरह मानव मनोविज्ञान छिपा हुआ होता है। इसका एक नमुना अपर हमने देखा।

सुअर, छिपकली, डायन, चुडैल की ही तरह एक अपशकुनी प्राणी के संदर्भमें जिक्र 'धाोडाकुआं' नाटकमें आया है और वह यह है ----

(१५) भागौती ----" दूर हो जा मेरे सामनेसे। खुद तो साही का काँटा बनकर मेरे द्वारमें आयी, मेरा नाम बेचा।" (पृ.१४१) इस उदाहरणका लोकरुढिके अपशकुन के अंतर्गत महत्वपूर्ण उदाहरण बन गया है क्यों कि अन्य लोकरुढि के अंतर्गत आनेवाले अपशकुनोंके संदर्भमें भविष्य का जिक्र, संकेत मिले लेकिन इस उदाहरणमें सूका साहीके काँटेकी तरह द्वारमें आनेके कारण ही उसका नाम बेचा, प्रतिष्ठा धूलमें मिल गई। इस प्रकार अपशकुन का मूर्तिमंत प्रभाव हम भागौतीके इस उद्गारमें स्पष्टतासे देख सकते हैं।

(१६) सूका --भी प्रतिशोधके रूपमें भागौतीको उद्देश्यकर कहती है -"मेरे सात मुददुई को ऐसे परानी से न भेंट हो। (पृ.१२८)

यहाँ "रानी" शब्दप्रयोग अपशकुन के अर्थमें प्रयुक्त किया है। लेकिन भागौतीके मरनेपर वह विधावा हो जाएगी और पहले बांझ और बादमें विधावा की नजरसे लोग उसकी ओर अपशकुन की नजरोंसे देखेंगे इसका भयंकर डर सूकाके मनमें है। उसके मनपर प्रारंभसे जन्मसे इसी तरह के संस्कार हो गये हैं, किये गये हैं कि विधावा समाज में बहुत ही अपशकुनी मानी जाती हैं।

(१७) सूका ---" मैं विधावा हो जाऊंगी। (पृ.१५५)

इस प्रकार इंदरसे कहती है और विधावा होकर अपशकुनी जिवनकी अपेक्षा वह इंदरके तलवारका घाव अपने पर लेकर मर जाना स्वीकार करती है।

इस तरह हमने देखा की लोकमर लोकरूढी के अंतर्गत अशकुन का इतना जबरदस्त प्रभाव रहता है कि सूका अपशकुनसे बचनेके लिए मौत का आनंदसे स्वीकार करती हैं।

(१) अंधविश्वास---अंधश्रद्धा।

शकुन अपशकुनकी ही तरह अंधविश्वास का लोकमें व्याप्त होना स्वाभाविक ही है। अंधाकुआ नाटकमें नाटककारने अंधविश्वास, अंधश्रद्धा के कई उदाहरण दिए हैं। प्रारंभिक अंकसे लेकर अंतिम अंकतक क्रमशः वे उदाहरणों को अब हम देखेंगे।

(१) सूका --- " अब तो जो चाहो कह लो ..... लेकिन अगर मैं न होती तो जन्मभर तेरे पुळेपर हल्दी न लगती क्या टूटसराप दूं माँ बाप को (पृ१०)

सूकाके इस वक्तव्यमें उसका अंधविश्वास है कि माँ बापको शाप देनेसे उनका बुरा हो सकता है।

परमेश्वरके बारेमें इसी तरहका अंधविश्वास अंधाकुआंका हरखू व्यक्त करता हैं। विशेषता यह है कि पद्य पंक्ति ही उद्धृत करता है।

(२) हरखू --- " ई है कि क्या करे कोई। जा को प्रभु दारुन दुख दीन्हा ताको मति पहिले हरि लीन्हा (पृ१५) याने प्रभुको जो दुख देता है प्रभु उसको दुख देता है। जिस सूकाने "सराप" नामक अंधविश्वासका उल्लेख किया उसी तरह व्दितीय अंकमें पहले आदमी का भी यहीं अंधविश्वास इस तरह वह प्रकट करता है -----

(३) पहला आदमी --- " सम्हलो तेजई भइया " सराप" दे रही है तुम्हें, इसकी आँख और ओंठ देखो न! (पृ५३)

पहले आदमीके कहनेका मतलब यहँ है कि इसके शापसे तेजई का बुरा हो सकता है। इस तरह अंधविश्वास का प्रभाव लोकमें दृष्टव्य हैं।

" परमेश्वर" और "शाप" संबंधी अंधविश्वासके साथ साथ "स्त्री" संबंधमें भी अंधविश्वास है। निम्नांकित स्त्री विषयक विचार भागौतीके पिताके हैं। लेकिन भागौतिके भी वहीं विचार बन जाते है। याने "स्त्री" विषयक हीन दृष्टिकोण की परंपरा ही है, ऐसा कहे तो अतिशयोक्ति न होगी।

(४) भागौती = "हमारे बाबा एक बात कहा करते थे मौसिया, कि औरत और भैंड को दो चीजें नहीं होती, न दिमाग न रीढ़ की हड्डी, बस इनके एक चीज होती है, गरदन, जिस किसीने इनकी गरदन नाप ली बस ये उन्हीं की हुई हैं (५७१)

इस वाक्यकी ओर सूक्ष्मतासे देखो तो दो बातें स्पष्ट होती है। एक यह कि औरत की तुलना भैंड जैसे प्राणीसे की है और दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह कि गरदन का उल्लेख जरूर किया है। लेकिन उसमें स्त्री का बडप्पन निर्देशित करनेके लिए नहीं बल्कि हेय दृष्टिसे ही किया है। गरदन नापनेसे स्त्री किसीकी भी हो सकती है। यह तो अंधविश्वास की चरमसीमा है।

एक सबसे बडा लोकविश्वास इस नाटकमें यह मिलता है, कि "भगवान" और "भाग्य" सब कुछ कर सकते है। सूका का अंध विश्वास भी देखने लायक है।

(५) सूका --- "मैं तो चाहती हूं चक्र गिर जाय। तू यहाँ पकडा जा। तुझपर भी उतनी ही मार पडे। तेरी भी उतनीही यातना हो, जितनी मेरी हुई है। (पृ. ७५) सूकाके अंधविश्वासका स्वरूप इस प्रकार है। उसे लगता है कोई दैवी चमत्कार हो जाए और उसमें इंदर पकडा जाए।

लेकिन नाटकमें हम देखते हैं कि सूकाका अंधविश्वास अंधविश्वास ही रह जाता है। ना कोई दैवी चक्र गिरता है और ना ही इंदर पकडा जाता है। ना ही सूकापर जितनी मार पडती उतनी मार इंदर पर पडती है और ना ही सूका जितनी यातना इंदर की होती है।

यहाँ हमने अंधविश्वास की वास्तविकता क्या है यह देखा। लेकिन इसी नाटकका इंदर सूकाके अंधान छुद छोडते हुए भी ईश्वरका नाम लेता हैं। वह वाक्य ही देखिए ---

(६) " इंदर ------ " मैंने तुम्हें क्या अंधानसे छुडाया, ईश्वरने छुडाया। (पृ. ७७)

तो ईश्वर के संबंधमें तिसरे अंकमें औरत कहती है ---
" भगवान सबका मालिक है दीदी। जाको राखो साईयाँ मार न सकी हैं कोय।" (पृ. ८७)

नंदो ने अपनी भोजाइयाँ--सूका और राजीके साथ दुर्व्यवहार किया। इसलिए ससुराल से नंदो चली आई है। याने जो बुराई करता है। उसके साथ भी अन्य इसी तरहकी बुराइयाँ करते हैं। इस तरहका लोकमें अंधविश्वास है। लालने तिसरे अंकमें औरत के मुखसे, कहलवाया है। यह अंधविश्वास बर्ताव संबंधी अंधविश्वास के अंतर्गत आता है। वाक्य इस प्रकार है ------

(७) सूका --" तीन ननद भी हैं, सिरपर चढी रहती हैं। नाऊ से अपने भाईके पास खबर भिजवायी थी कि " ऐ भइया, मुझे जल्दी ले चले, मेरी रहाइस नहीं है रोज रोज मार, ताना-बोली देवरानी-जेठानी का झगडा। "

औरत --"ओ हो हो ! न कर सास बुराई, तेरे धी के आगे आयी।" आज नंदो के सिरपर यही बरसा न (पृ.६८)

प्रस्तुत वाक्य द्वारा यह अंधविश्वास प्रकट होता है कि नंदोने बुराई की इसलिए आज उसकी इसी तरहकी दुर्व्यवस्था हो गई है।

इसी तरहका अंधविश्वास ईश्वरके संबंधमें हरखूने व्यक्त किया है। अलगूने भागौतीसे बँटवारा कर लिया अच्छा किया।

(८) हरखू --- " ई है कि ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है भागौती ! मैं तो यही समझता हूँ।" (पृ.६९) यह अंधविश्वास व्यक्त हुआ है कि भागौती और अलगू का बँटवारा हो इसी तरहकी ईश्वरकी मर्जी है।

अबतक ईश्वर संबंधी अंधविश्वास देखा। अब भूत प्रेत संबंधी अंधविश्वास देखेंगे।

तृतीय अंकमें भागौतीकी व्दितीय पत्नि लच्छी भागौतीके साथ अब एक दिन भी रहना नहीं चाहती। इसकी अपेक्षा उसे कहीं न कहीं बुडधास कर मरना पसंद है। तब सूका उसे इस तरह कहनेसे रोककर अपना अंधविश्वास व्यक्त करती है।

कमरेके दरवाजेपर टाँग देना जिसमें तुम्हारी औरत सोती हो |" (पृ.१०२)

लेकिन मंत्र-तंत्र जादू टोना करनेपर भी सुकाको कोई संतति प्राप्ति नहीं होती | यह उसनेही इसी वक्तव्यमें ही कहा है |

"• • • • मैंने यह भी करके देख लिया लेकिन नहीं, हाय हाय पिस, बंजर धरती में भी कभी कुछ हुआ है काका, |" तब मिनकू काका उस मंत्रकी कमी बताते हैं | फिर भी भागौतीका

मंत्र-तंत्र जादू टोने संबंधी का अंधविश्वास कायम है । नाटकमें विचार इस तरह प्रकट हुए हैं ।

मिनकू --- " फिर तो यह खोपड़ी झूठी है, अब क्यों इसे रखते हो, ले जाकर फैंक न आओ उसी औघड के पास । " (पृ. १०३)

(११) भागौती --- " अहा -- हा हा ! यह खोपड़ी नहीं झूठी है काका, झूठी तो सूका है, जब उसमें औरतपन ही नहीं है तो फिर इस खोपड़ी का क्या दोष ।

(१३) भागौती ---- " तो मौसिया, मुझे इधार खाँसी आने लगी है|....
इधार दो तीन दिनोंसे कुछ कुछ दम भी फूलने लगा है |" (पृ ११७)

हरखू ----" ई है कि इसकी क्या चिंता | अरे इतवार-मंगल सूरज
को दो लोटा जल चढा दो बस |" (पृ ११७)

~~सूकाके संतति~~ ---- सूकाके संतति के बारेमें भागौतीने बंदरको झोपडी लाई
थी | लेकिन लच्छी के संबंधामें हरखूने जो उपाय सूझाया वह देखना
है |

(१४) हरखू ---- " और कुछ उम्मीद-आसरा भी दिखाई पडा कि नहीं?
.... अगर नहीं तो कहीं उसे तकी पीर के मेलेमें ले जाओ|,
सुना है शाहपुरका फकीर अगर ~~ब~~ जुमेके दिन किसीको दुआ करके
ताबीज दे दे, तो चौथें ही महीने उसका आँचल सम्हाले न सम्हले |" (पृ ११८-११९)

थाडेमें हरखूका संतान प्राप्तिके संबंधामें अपना अंधाविश्वास ऐसे
एक दूसरेको बताकर ही लोकका रस ग्रहण करते है |

इस तरह अगर भागौतीकी कोई आल-औलाद नहीं होती
तो मरनेके बाद तो आत्माकी अवस्था बहुत ही दूभर होगी ---- इस
संबंधामें हरखूका अंधाविश्वास देखें ----

(१५) हरखू ---- " हाँ और नहीं तो क्या | ई है कि, सोचने की बात है,
कि अगर तुम्हें कोई आल-औलाद नहीं होती, और कलको तुम मर
जाते हो, तो क्या होगा ? सारी ज्यादाद अलगूके हाथ ~~पितरपक्खा~~
चली जायगी, और पितरपक्खा में तुम्हारी आत्मा एक लोटा पानीके
तरसकर प्यासी रह जायगी |" (पृ ११९)

सूकाने जिस तरह बुडने धूसने के संबंधमें मरणोपरान्त का अंध विश्वास व्यक्त किया गया है। ठीक वैसेही मरणोपरांति आत्मा तडपेगी ऐसा अंधविश्वास हरखूका भागौतीके संबंधमें है।

और हरखूके उपर्युक्त अंधविश्वास पर विश्वास रखकर भागौती उसीके संबंधमें कृति भी करनेवाला है।

(१६) भागौती --- " ठीक कहते हो मौसिया। मैं इसी जुमेको लच्छीको लेकर शाहपुर जाऊंगा।" (पृ.११९)

जिस बंदरकी खोपडीके बारेमें भागौती संतान प्राप्तिके लिए उपयोग करना चाहता था। सूका भी लच्छी को यही उददेश्यसे बंदरकी खोपडी लच्छीके हीराके साथ भाग जाते वक्त दे देती है। इतनाही इसी बंदरकी खोपडीका उपयोग जैसे संतान प्राप्तिके लिए तो है ही लेकिन सूकाकी दृष्टिसे बंदर की खोपडी साथ हो तो रास्तेमें भूत प्रेत लगनेका कोई डर नहीं है ---

(१७) सूका ---- "• • • • उससे यही होगा कि रास्तेमें कहीं भूत-परेतका डर नहीं रहेगा। और मेरी बात भूलना नहीं जहां जाओगी, वहां अपने दरवाजेपर इसे जरूर टांग देना, हां / (पृ.१२३)

यहीं सूका अपनी सौत पर वास्तवमें बेटी जैसी लच्छीको अपनी सूनी मांगसे बिदा नहीं करना चाहती --- यह सदा• हमने अपशकुनी लोक-रुढिके अंतर्गत रखा जरूर है, फिर भी इसमें अपशकुन के साथ साथ अंधविश्वास भी है।

(१८) सूका ---- " मैं तुझे अपनी सूनी माँगसे नहीं बिदा करूँगी | आज तेरे लिए मैं भी सुहागन बनूँगी | " (पृ १२३)

चतुर्थ अंकमें लच्छो के लापता होनेकी बात स्त्रियोंमें और सूकामें चलरही है | तब दूसरी औरत भागनेके संबंधमें अपने "सपनेका" अंधविश्वास बताकर वह सत्य कैसे हुआ यह भी बताती है ----

(१९) दूसरी औरत ----" कहाँ अब वह बताने आ रही है | मुझे भाइयारे इसी बातपर पूरा विश्वास है और कई दिन इसे मैंने सपनेमें भी देखा

थी | "१२७

मृत्युके बारेमें लोकोंमें अनेक तरहके अंधविश्वास होते हैं सूकाने, अपना अंधविश्वास इस तरह प्रकट किया है ----

(२०) सूका ----" न जाने कहाँ भगवानने उसका कागज छिपा रख्खा है, न जीने को, न मरनेको | (पृ.१३३)

मरनेके साथ साथ सूकाने " मुक्तिके " बारेमें अंधविश्वास व्यक्त किया है |

(२१) सूका ---- " लेकिन कुछ न करुं तो जाऊं कहाँ | इसे छोडकर और कहीं मेरी मुक्ति भी तो नहीं है | (पृ.१३४)

लोकमें साधारणत: मृत्यु और मोक्ष — मुक्ति संबंधमें अंधविश्वास प्रचलित है | उनके ही दर्शन हम यहाँ कर रहे हैं |

बच्चों संबंधमें जो अंधविश्वास हैं उनमें एक उदाहरण यहाँ देखने लायक है |

इस तरह अंधविश्वास के अंतर्गत मंत्र तंत्रका मिनकूपर पूर्ण रितिसे प्रभाव पड गया है । इसका जीता जागता उदाहरण आलोच्य वाक्य है ।

भागौती भी मिनकूसे अंधविश्वासपर विश्वास रखनेमें कुछ कम नहीं है। मिनकूसे पूछता है --------

(२६) भागौती -----" उसकी भावानी ने यह नहीं बताया कि लच्छिया कहा है ?
मिनकु---- " बतया है -- नाम तो नहीं बताया भागौती, लेकिन उसने रत्ती रत्ती बात बता दी ।" (पृ.१४५)

" और जो कुछ मिनकू की भावानीने कहा, कि उस रात एक नौजवान घार के किनारे, नीमकेपेडपर संझाहीसे बैठा था। भिनसार हो रहा था, लछिया बाहर निकली, उसने किसी और को समझाकर उसे घार दबाया और वह सीधे लछियाको पच्छू दिशा ले गया। . . . . बहुत बडा शहर है, कपडा, लोही और चमडेके बडे बडे कारखाने हैं उस शहरमें। ये सारी बातें और सूका, हिरा और लच्छीमें हो गई बातें इनसे पाठक-दर्शक पूर्ण परिचित हैं।सूकाने लच्छीको बतायी थी ---

सूका ------ " अपने हीराकी एक एक बात मानना। एक कदम भी आगे न रखना बिना उनसे पूछे । मैंने सब ते कर लिया है, सब ठीक होब गया है। आज रातभार तुझे चलना होगा । भोरमें सरजू नदीका पहला खेवा उतरकर वे तुझे दक्खिन ले जायेंगे, यहांसे तेरह कोस जमीन। फिर वहां मोटर मिलेगी, उसमें बैठकर परसों शामतक तू सुलतापुर जिलमें पहुंच जायगी, बेलीडोहा गांवमें, वहीं हीरा की ननिहाल है (पृ.१२१)

इस तरहकी वास्तविकता और भावानी व्दारा कही गई बात यहां दिशा और गांवोंके नाम बिलकुल अलग है ।

इससे पता चलता है कि वास्तविकता कुछ और होती है अंधविश्वास कुछ और होता है ।

भावानीने बताया पच्छू दिशा और लच्छी हीराके साथ गयी थी दक्षिण की ओर, भावानीने गाँवका नाम लानपुर शहर का बताया पर वे दोनों गये थे। बेलीडीहा गाँवमें, भावानीने बताया कि लच्छीको पाँचसौ रुपयेमें एक ठीकेदारने खरीद लिया है पर वह हीराके साथ गई हुई थी।

इस तरह नाटकके दो पात्रोंके वक्तव्यसे ही लेखकने अंधविश्वासों का मानों भाँडा ही फोड डाला है।

एक अलग तरह का अंधविश्वास याने " भूत हाँकना " इसके संदर्भ में भी भागौतीका कथन देखनेलायक है।

जो भागौती सूकाको छुडानेके लिए आए हुए खर्चका आधा हिस्सा ------------मांगता है। वहीं भागौती हरख् के कथनपर अपना विचार इस तरह प्रकट करता है जिससे पता चलता है कि अंधविश्वास-भूत हाँकना-फूक मारनेमें वह चाहे जितनी कीमत देनेके लिए तैयार है। जिससे लच्छी पकडी जा सके।

(२७) मिनकू ---" सोखाने कुल पंद्रह रुपयेका खर्च बताया है, लेकिन यह भी कहा है कि वह लडकी को पकडकर दिखा देगा।(पृ.१४६)

(२८) भागौती ----" पंद्रह तो क्या काका, मैं पाँच सो रुपये खर्च करनेके लिए तैयार हूं। वह भूत हाँकना नहीं जानता काका।" (पृ.१४६)

मिनकू ---- " क्यों नहीं ! ओह ! वह तो ऐसी फूक मारता है कि खरीं खाटेमें आदमी अंधा हो जाय, बाघी हो जाय, उसके मुंहसे

बात न निकले | ..... चाहे जो लगे काका | तुम कल ही देवगाँव जाओ और सोखासे कहो कि इंदरवा पर भूत हाँक दे | ऐसी मूठ मारे कि वह अंधा होकर छटपटाता हुआ मेरे पास आकर गिर पडे |" (पृ. १४६-१४८)

इस संपूर्ण वाक्तव्यमें लोकमें व्याप्त अंधविश्वास का जबरदस्त प्रभाव देखते हैं | इतनाही नहीं भागौतीने सूकापर अत्याचार किया इसके फलस्वरूप वह अपंग बन गया | यही उसका मत है | वह कहता है----

(२९) भागौती ---- " तो उसी पापसे मेरा यह पैर टूटा है, बोल! बोलती क्यों नहीं ?" (पृ. १४८)

यहाँ पाप संबंधी भागौतिका अंधविश्वास प्रकट हुआ है | इसी तरह राजीका नैंदोके, संबंधमें यही विचार है कि ----

(३०) राजी ----"बडी मिठाईमें कीयाँ पडता है |" (पृ. १५०)

इस तरह उसका अंधविश्वास स्पष्ट हुआ है |

अंतमें भागौतीका अंधविश्वास देखेंगे | जो भागौती ईश्वर आदि मानता नहीं वहीं भागौती इस तरह कहता है जो देखकर हमें बडा ताज्जुब होता है |

(३१) भागौती ---- "अच्छा हो जाऊ, तुझे लेकर कहीं तीरथ करने जाऊँगा|" (पृ. १५१)
क्या यहीं भागौती है ? इस प्रकारका सवाल हमारे मनमें पैदा होता है | लेकिन इसमें भागौतिका कुछ भी दोष नहीं कहा जा सकता| क्योंकि अंधविश्वासका वह शिकार बना हुआ है | इतनाही हम उसके संबंधमें कहे तो उचित होगा क्यों कि अंधविश्वासके लिए पर्याय लोकके पास नहीं है |

लोकरूढिके अंतर्गत चौथा प्रकार अब हम देखने जा रहे हैं और यह हैं भाग्य या देव।------

लोकमानस आस्तिकवादी तथा भाग्यवादी होता है। इसलिए प्रत्येक कार्यके प्रारंभमें भाग्य अपने पक्षमें है अथवा नहीं। इस शंकासे वह कातर हो उठता है। इस तरह लोकमें दैनंदिन जीवनमें भाग्यवाद की, देववाद की प्रवृत्ति अधिकतर दिखाई देती है। इसलिए लोक प्राय: ईश्वरवादी, भाग्यवादी दिखाई देते हैं। वे भाग्यका निर्माता ईश्वर या विधाता मानते है। वे सोचते है कि ईश्वर का, भाग्य या ललाटमें ऐसाही विधान लिखा था। इसलिए ऐसा ही हुआ।

इस तरह भाग्य, नसीब, किस्मत, तकदीर, ललाट रेखा को अधिक मानता है। लोकमानस कार्य के पीछे कारणको नहीं मानता बल्किभाग्यको, सत्ताको स्वीकारता दिखाई देता है।

भाग्य के आगे मनुष्य की सत्ता उन्हें नगण्यसी लगती है/इतनाही नहीं प्रयत्न भाग्यको बदल सकते हैं। इसपर इनका विश्वास ही नहीं है, बल्कि सपनेमें भी इस तरहका भाग्यके आगे मनुष्यका अस्तित्व, प्रयत्न महत्त्वपूर्ण होते हैं। यह स्वीकार करनेकी उनकी मानसिक तैयारी नहीं रहती है।

उनकी दृष्टिमें एकमेव, सर्वेसर्वा भाग्य, ईश्वर ही है। इसलिए प्रत्येक कार्य की सफलता असफलतामें वह भाग्य और ईश्वरका साथ छोडता नहीं है। इस तरहके उनपर जन्मसे लेकर संस्कार ही हो गये हैं, उनकी भाग्यके प्रति देखनेकी धारणा इतनी मजबूतहै, दृढ है जो " लोक" का एक प्रधान, अविभाज्य अंग ही बन गई है।

अंधाकुआमें जिस तरह अधिकतर पात्र शकुन अपशकुन अंधविश्वास, जादू टोना- मंत्र तंत्र- भूतप्रेत आदि लोकरूढिपर विश्वास करते दिखाई देते हैं, उसी तरह भाग्यका, देववादका सहारा भी ले लेनेसे नहीं चूकते। अंधाकुआमें जो जो भाग्यवाद संबंधी उदाहरण आए हैं उन्हें देखेंगे।

भाग्यवाद ----

(१) सूका ---- " अब तो जो चाहो कह लो ..... लेकिन अगर मैं न होती तो जन्मभर तेरे फुके पर हल्दी न लगती / दगा टूट - सराप दू माँ बाप की, अपने भाग्य को क्या रोऊं ? " (पृ. १०)

इस वक्तव्यमें सूकाके कहनेका अर्थ यह है कि सूका की शादी भागौती नामक भयानक क्रूर व्यक्तिसे हो गई है। इसमें माँ बापको शाप देनेसे कुछ नहीं होगा / बल्कि अपना ही भाग्य इसके लिए जिम्मेदार है। इस तरह भाग्यवादका समर्थन करती हुई दिखाई देती है।

इसी नाटक का दूसरा प्रमुख स्त्री पात्र राजी का भी भाग्य और भगवान के संबंधमें जो विश्वास है। वह प्रस्तुत है ---

(२) राजी ---- " दीदी के भाग भी तो जलने लायक हैं। इस हारसे दहिजरा जी लेके कहीं डूबने धसने भी गयी तो इन्हें और कोई कुआँ न मिला, भगवान की भी आँख फूटी है । (पृ. ६१)

यहाँ राजीका मंतव्य है कि जो कुछ सूका के साथ हुआ उसके लिए उसका भाग्य और भगवान ही जिम्मेदार है।

जिसपर भगवानका कोप हो वहीं भागौती की बुरी बुरी बातें सुनेगा। इस तरहका आशय राजी यहाँ व्यक्तकर रही है ---- "राजी मैं क्यों, तेरी देव फोडेगा । (पृ ६२) उसके बाद कहती है /

(३) राजी ---- "मैं भी साफ कहती हूं, आग लगे मडवे, बजरपरे बियाहे, मैं तुम्हारी बात सहनेके लिए नहीं हूं। तुम्हारी सहे वह जिसपर भगवान का कोप हो .... " (पृ ६१)

राजीके कहनेका आशय है कि सूकापर भगवानका कोप हुआ है।

यही विश्वास राजीका है। इस तरह संपूर्ण लोकका भी यही विचार है। केवल सूका और राजी ही भाग्य, भगवान पर विश्वास नहीं करती बल्कि व्दितीय अंकका पहला आदमी भी दैव के प्रभावसे प्रभावित है।

(४) पहला आदमी ---- " अरे भइया ई समझो कि देवसंयोग से वह कुआँ सूखा था नहीं तो। (पृ५२)

(५) तीसरा आदमी ---- " हाँ हाँ, भइया बिलकुल ठीक, यह तो अपनी जान देने गयी थी, बच गयी यह तो भगवानकी माया है। (पृ५२)

इस तरह भगवान संबंधी उल्टे सीधे विचार जो लोक में व्याप्त है हमने ऊपर देखों।

घटना एक ही है ---- सूकाका कुएँमें गिरना --- उसका बच निकलना राजी और सूकाकी दृष्टिमें भाग्यका कोप है तो इसी कमालपुरके व्यक्तियों की दृष्टिमें देवसंयोग या भगवानकी माया कहा जाता है।

सूका अपने बारेमें जैसे भाग्यको कोसती है। वैसे ही लच्छीके किस्मत को भी कोसती हुई दिखाई देती है -----

(६) सूका -------" इतनी अच्छी लड़की न जाने यहाँ कैसे आ फंसी काका। उसकी भी किस्मत को क्या कहूँ। (पृ१००)

थोडेमें यह लोक किस्मत, भगवानके नामपर रोता हुआ दिखाई देता है। लच्छी इसका अपवाद नहीं है। लच्छी भी अपने भाग्य को ही दोष देती दिखाई देती है।

(७) लच्छी ---- " लेकिन भाग में तो था पहले कमालपुर, ब्रहमकी काटी कौन मेटता दीदी।" (पृ१११)

सूका भी अेक बार फिर ईदरके साथ भागनेमें असफल होनेका दोष भाग्य को ही देती दिखाई देती है।

(८) सूका ----- " इस हारसे तबाह होकर अच्छेके लिए मैं उसके संग भागी थी। लेकिन जब भागमें अच्छा लेकर उतरी ही न थी। तो क्या होता।" पृ ११२

थोडेमें अगर भाग्यमें सफल होना न लिखा हो तो कैसे कोई सफल हो सकता है ? ऐसा लोकमें सर्वत्र विश्वास है। इतनाही नहीं एकके भाग की छाया दूसरे के भागके लिए खतरनाक हो सकती है। सूकाका इस संदर्भमें वक्तव्य देखों -----

(९) सूका ----- " तुम्हारे भागपर मैं अपने भागकी साया नहीं पडने दूगी बिट्टी। घबराओ नहीं, सब मेरीही तरह अभागे नहीं होते। (पृ ११२)

इस तरह अभाग और भाग्यवान के संबंधमें लोकमें भरपूर अंधविश्वास लोकरुढि विद्यमान है। तो कहीं कहीं -----

एक अभागी दुसरी को ढाढस बंधानेका महत्वपूर्ण कार्य भी करती दिखाई देती है ----- सूका लच्छीको इसी तरह समझाती है-----

(१०) सूका ----- " पगली। तू अपने मंगेतर के साथ जा रही है। डरी तो मैं नहीं जोएक परायेके साथ भागी थी। फिर जिस तरह मेरे करममें आग लगी है, वैसा किसीका नहीं है बिटटो। तेरे तो भाग उजागर है, चांद -- सूरज हैं तेरे भागमें।" (पृ ११३)

यह लच्छीके संबंधमें सूकाने भाग्यके संबंधमें कहा। वहीं सूका अपने पतिके अत्याचारका लेखा जोखा उसके सामने रखकर परमेश्वर तुम्हें देखोंगे। ऐसा उसका दृढ विश्वास इस तरह स्पष्ट हुआ हैं -----

(११) सूका --- " . . . जो करनी मैंने की थी, वह मेरे आगे उतरा। मैं उसका फल भोग रही हूँ और मरते दमतक भोगूंगी। और जो इन्होंने किया है, उसका लेखा-जोखा, हे भगवान त्रिलोकीनाथ तुम्हीं जानो। " (पृ. १२८)

इस प्रकार परमेश्वरके आगे जानेकी तैयारी सूकाकी है। सारा हिसाब किताब रखनेके लिए और तदनुसार सजा भुगतनेके लिए भी वह तैयार दिखाई देती है। उसका विश्वास है की भागोतीको भी उसके कर्मोके अनुसार परमेश्वर प्रायश्चित देगा। और इसलिए अपंग हो जानेके कारण जो यातनाएँ भागोती भुगत रहा है। वह सूकाके अत्याचारकाही फल है इस तरहके विचार प्रस्तुत वाक्यमें अभिप्रेत हैं।

(१२) सूका ---- " करमने जब जहरका पेड लगाया था, तब उसमें मेवे कहासे फलेंगे। " (पृ. १४१)

परमेश्वर को न माननेवाला भागोती पहली बार अपने और सूकाके भाग्य-अभाग्यका जिक्र यों करता है ----

(१३) भागोती --- " मेरे संग तेरा भी अभाग है सूका! पता नहीं, हम दोनोंके भाग्य में क्या लिखा था " (पृ. १५३)

विशेष - अब लोकरूढिके ही अंतर्गत अंधाकुओंमें व्यक्त अंतिम लोकरूढि देखने जा रहे हैं और वह है --- प्रथा, रीति रिवाज इसके अंतर्गत नमस्कार, आशीर्वाद, विवाह संबंधी प्रथा स्पष्ट है।

(१) नमस्कार ---- शहरोमें जैसे एक व्यक्ति दुसरेसे मिलता है तब "हलो" कहता है तब लोकमें हाथ जोडकर या केवल मुंहसे नमस्कार, जयरामजीकी कहा जाता है।

रामदीन साहुकार जब भागोतीके द्वार आता है तब भागोती कहता है ------

(१) भागोती ---- " जे राम साहू....जे राम ! साहुजी, और सब कुशल मङ्गल है न . . . . । आवो पलंग पर बैठो । [पृ.१०]

रामदीन जवाबमें कहता है ।

रामदीन ---- " सब ठीक है, ऐसे ही अच्छा है । कहो, द्वारमें सब राजी खुशी है न ।" [पृ.१०]

इस प्रकार जोखनके आनेपर भी भागोती जोखनको पहले नमस्कार बादमें कुशाल मंगल पूछता है ----------

(२) भागोती ----" राम राम साहू । आवो बैठो । .... बाल बच्चे सब अच्छे से हैं न साहू । [पृ १६]

जोखन ----- " सब पंच की दुआ है भइया ।" [पृ १६]

इस प्रकार नमस्कार, कुशाल मंगल पूछनेपर बातचीत का दौर आगे बढता हुआ लोकमें दिखाई देता है । लेकिन पुरुषोंकी तरह स्त्रिया जब आपसमें मिलती है । तो कभी इस तरह का नमस्कार करती दिखाई नहीं देती । लेकिन कुशाल मंगल जरुर पूछती है ।

(2) आशीर्वाद ---- जब पैर छूनेका उपक्रम किया जाता है । तब आशीर्वाद दे दिया जाता है । इस तरहका आशीर्वाद स्त्रिया भी दे सकती है ।

(१) अंधाकुआँ के तृतीय अंकमें माधोपूरवाले की लच्छीको जो चिठ्ठी आती है । इसमें सूकाके पैर छूनेकी बात लिखी है । लेकिन इसी अंकमें जब प्रत्यक्षामें हीरा लच्छीको ले जानेके लिए आता है तो सूकाके पहिले पैर छूता है --" पा लागन दीदी । तब सूका आशीर्वादके रुपमें कहती है । ॰

सुखी रहो चलो भोजन कर लो | (पृ १२४)

इससे पहले भी जब लच्छी हीराके साथ जानेसे पहले
" लच्छी अपने आँचलसे सूकाके पैर छूती है और उसे अपने माथे लगाती है | (पृ १२१)
तब सूका भारे कंठसे उसे इस तरह आशीर्वाद देती है ----

(२४) सूका ---- " सब मंशा पूरी हो, दूधो नहाव, पूतो फलो | (पृ १२१)

(३) विवाहसंबंधी प्रथाएं--- अंधाकुआँ इस नाटकमें विवाहसंबंधी प्रथाके संबंधमें लच्छीका कथन तृतीय अंकमें देख सकते हैं ---------

(१) लच्छी ---- " . . . . . उनसे मेरा विवाह पक्का हो गया था, लगन बढ गयी थी, इधर उधर हल्दी घूम गयी थी | यहाँ तक कि दीदी | एक दिन देहमें बुकवा भी लग गया था | (पृ ११०)

इसेही लगन बढना कहते हैं | इस तरह आम विवाह हुआ करते हैं | जिसमें पहले विवाह पक्का किया जाता है | उसके बाद लगन बढती है, इधर उधर हल्दी घुमायी जाती है और दुल्हनकी देहमें बुकवा लगाया जाता है |

इस तरह विवाहके ये संस्कार होते है | यहाँ राजी, नंदो आदि की शादियाँ इस तरह हो गई थी | लेकिन सूका और लच्छी की शादी उपर्युक्त प्रथासे न होकर उन्हें भगौतीने खरीदकर उनसे विवाह किया था | ये विवाहके दो प्रकार हैं | पहला श्रेष्ठ और दूसरा निकृष्ट विवाह कहा जा सकता है क्यों कि दोनोंको भी इस तरह किया गया पसंद नहीं हैं | लोकमें दोनों पद्धतियाँ प्रचलित हैं |

कमालपुरमें पहले विवाह की प्रथा की तरह दूसरा विवाह भी किया जाता है | इसका उदाहरण भगौतीके उदाहरणासे

जान जाते हैं । लेकिन दूसरे विवाह को हम परंपरा नहीं कह सकते क्यों कि इस तरह परंपरा शब्दका इस्तेमाल करें तो अलगू मिनकू तेजई, सूरत, रामदीन आारे परभूको भी दो-दो शादियां हो गई हैं या करनी चाहिए । शादीके बाद की विधि है गौना---- जिसका जिक्र अलगू, बहन नंदो को उददेशकर कहता है ---

" ~~अब~~--अब आग लगाती फिरती है घरमें, याद रखना, गौने जाकर इस घरका मुह न देखने पायेगी । "(पृ ६४) साथही तिसरे अंक के लोकगीतमें भी इसी तरहका उल्लेख आया है ---" भैइया बन्दा के सोधासे गवनवां रे ना । "

पहिले-पहिले बन्दा आयी है गवनवां रे ना, (पृ ८४) केवल इससे हम लोकके संस्कार, मानवकी भिन्न भिन्न प्रवृत्तियोंको अच्छी तरहसे समझ सकते है । इस दृष्टिसे लोकतत्त्व एक दर्पण की तरह हैं । यह जो कहा जाता है, वह सही है । लोकसंस्कृति जाननेका एकमेव साधन लोकतत्त्व है । आाकुआं का आलोच्य लोकतत्त्व ---- लोकरुढि भी इसके लिए अपवाद नहीं है ।

सब लोकतत्त्व उचित है, श्रेष्ठ है ऐसा नहीं कहा जा सकता क्यों कि जहां लोक होंगे वहां अच्छे और बुरेका ~~हमें विभिन्न लोकतत्त्वोंकी और देखना, उनका परीक्षण करना है ।~~ संग्राम तो होगा ही । इस वास्तविकताको ध्यानमें लेकर ही हमें विभिन्न लोकतत्त्वोंकी ओर देखना, उनका परीक्षण करना है । . . . .

:: पंचम अध्याय ::

: मुहावरे और लोकउपमान (Similies)

उपमानोंका मनोवैज्ञानिक आधार ---

" भाषाके प्रारंभ के साथ अति प्राचीन कालसे ही मानवने अपने भावोंको, अभिव्यक्त करनेके लिए उपमानोंका सहारा लिया होगा, क्योंकि उपमानोंका भी संबंध भाषाके ही समान भावोंकी अभिव्यक्ति है और जहाँ भाषा भावोंकी अभिव्यक्ति का साधन है वही उपमान अभिव्यक्ति के साथ ही साथ भावोंको अधिक स्पष्टतर बनानेमें सहायक है।"
" Similies are used for introducing simplicity and clarity of Expression " 1

उपमानोंका प्रयोग मानव ने तबसे ही प्रारंभ कर दिया होगा। जब कि उसने अपने भावोंको दूसरोंतक पहुंचाना शुरू किया होगा। दिवेकर आदि कुछ विद्वानोंका विचार है कि उपमानोंका प्रयोग एक विकसित मस्तिष्क की उपज है और सभ्यता तथा ज्ञानके अति विकसित स्तरपर ही मानव उपमानों--का प्रयोग कर सकता है, उपमानके प्रयोगके पीछे कलात्मक बुद्धि है। किंतु यदि आदिम मानस या लोकमानस और शिशु मानसका अध्ययन किया जाए तो दिवेकर के सिद्धांत सत्य से बहुत दूर प्रतीत होते हैं और ऐसा लगता है कि दिवेकर महोदयने साहित्यिक कलात्मक, उपमानोंको अपने अध्ययनका ही केवल विषय बनाकर तत्संबंधी निष्कर्ष दिए हैं। दिवेकर महोदयने अनपढ, गंवार, असभ्य तथा लोक वर्ग जिन उपमानोंका अध्ययन नहीं किया, जिनमें भावोंकी श्रेष्ठताका आधिक्य और साहित्यिकता, कलात्मकता तुलनामें कम है। फिर भी लोक उपमानोंके इस्तेमाल के पीछे, लोकके दो उद्देश्य हैं -------

(१) अपने भावोंको स्पष्टसे स्पष्टतर बनाना।--(हो सकता है साहित्यिक या आभिजात्य की तुलनामें कम महत्वपूर्ण।)

(२) लोकउपमान संबंधी भावोंकी अभिव्यक्ति श्रोतातक आसानीसे

---

(1) Similies in ... adkar, M. D.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

पहुँचाना है। = (न कि किसी विद्वान या पाठकतक पहुँचाना जो उददेश्य आभिजात्य साहित्यकेअंतर्गत महत्त्व रखता है, चाहे वह दुर्बोध,कठिन, क्लिष्ट ही क्यों न हो।)

<u>लोक उपमानोंका कार्यक्षेत्र</u> --- आदिम मानव, जनसाधारण या लोक वर्ग जब किसी अमूर्त रूपकी अभिव्यक्ति नहीं करा पाता, तभी वह उपमानोंका सहारा लेता है। यहीं लोक उपमान हैं और यहींसे ही लोकउपमानोंका सच्च अर्थमें कार्यक्षेत्र शुरू होता है। उदा० जब उसे नीले रंग का स्वरूप बताना होता है तो वह कहता है आकाश के समान नब-नीला = यहाँ नीले रंगके लिए आकाश का उपमान दे दिया। वह ऐसे लोक उपमानोंका उपयोग करता है जिसे सब समझ सकते हैं और जिससे सब परिचित रहते हैं।

<u>लोक उपमानकी व्याख्या</u> = लोक उपमान उसे कहते है जब अपरिचित वस्तुका बोध श्रोताकों परिचित वस्तुसे कराया जाता हैं।

इसलिए दिवेकर आदि विद्वानोंकी लोक उपमान संबंधी विचारोंका खंडन गोंड आदि विद्वानोंने इस तरह किया है " उपमान एक विकसित मस्तिष्क की उपज नहीं वरन् आदिम मानस या लोकमानसकी उपज है। " १

अथाकुआमें आनेवाले जो लोकउपमान उनका स्वरूप समझानेके लिए यह आवश्यक है कि शिष्ट साहित्यका और लोक साहित्यका उपमानके संबंधमें विचार देखना चाहिए। शिष्ट साहित्य तथा लोकसाहित्य दोनोंमें भी उपमानोंका भालेही प्रयोग क्यों न होता हो। लेकिन दोनोंमें जो उपमान इस्तेमाल किए जाते हैं उनमें काफी अंतर होता है।

शिष्ट साहित्य	लोकसाहित्य
(१) इसमें प्रयुक्त उपमानके मूलमें मुनिमानस ।	(१) इसमें प्रयुक्त उपमानके मूलमें लोकमानस ।
(२) इसमें प्रयुक्त उपमान बौध्दिक, कविकी कलात्मकताका परिचय ।	(२) इसमें प्रयुक्त उपमान भावपूर्ण, लोकके ह्रदयका परिचय ।
(३) इसमें प्रयुक्त उपमान क्लिष्ट, दुर्बोध और अधिकतर जीवनसे दूर उपमान होते हैं ।	(३) इसमें प्रयुक्त उपमान सहज, सुलभ और जीवनको सामान्य वस्तुओंसे संबंधित ।
(४) इसमें प्रयुक्त उपमान बनावटी, कृत्रिम, होते हैं ।	(४) ये उपमान सहज, स्वाभाविक होते हैं ।
(५) इसमें प्रयुक्त उपमान अलंकृत, जडिया धाडिया भाषामें प्रयुक्त होते हैं । ये मस्तिष्ककी देन होते हैं और सबको समान रुपसे आकर्षक नहीं लगते ।	(५) इसमें प्रयुक्त उपमान सर्वसाधारण की बोलीमें प्रयुक्त होते हैं । ये ह्रदयकी देन होने के कारण सबको समान रुपसे आकर्षक लगते हैं ।
(६) इसमें प्रयुक्त उपमान समझानेके लिए विकसित मस्तिष्कवाले की आवश्यकता होती है। साधारण उसे नहीं समझ सकता ।	(६) इसमें प्रयुक्त उपमान समझाने के लिए बहुत अधिक बुध्दिवालेकी बिलकुल जरुरत नहीं । साधारण के साथ साथ विकसित मस्तिष्क वाला भी इसे आसानीसे समझ सकता है ।

शिष्ट साहित्य ।		लोकसाहित्य ।
(७) उदा. केश = सर्पिणी, मुख=चंद्र	:	(७) उदा. केशोंका जूडा=लाठीका हुडा,
नेत्र = खंजन,	:	गाल = मालपुआ,
भौंह = कामदेवकी सेना ।	:	पतलापन = पान, मस्तक= लोटा ।

अबतक हमने शिष्ट साहित्यमें प्रयुक्त उपमान और लोक साहित्यमें प्रयुक्त उपमान में अंतर देखा।

अब अंधाकुओंके अंतर्गत आनेवाले उपमान लोक-उपमानोंकी ही तरह हैं। जिसे अब हम देखने जा रहे हैं -------

लेकिन अंधाकुओंमें प्रयुक्त उपमानोंका वर्गीकरण करना जरूरी है।

लोक उपमान

(१) प्राकृतिक । (२) पशु-पक्षी वर्ग । (३) मानव वर्ग तथा मानव जीवनसे संबंधित ।

(१) प्राकृतिक उपमान :--- साधारण जन या लोक को मानव जीवन और प्राकृतिक जगत की वस्तुओंमें कोई विशेष अंतर नहीं प्रतीत होता है। उसे प्रकृतिमें भी जीवन दिखाई देता है। इसलिए अपने दैनंदिन जीवनमें वह प्राकृतिक वस्तुओंके उपमान दे देता है।

झाँझा कुआँमें भी प्राकृतिक लोक उपमान प्रयुक्त करनेकी यहीं प्रवृत्ति एकसे अंतिम अंकोंतक दिखाई देती है।

: झाँझा कुआँमें प्राकृतिक उपमान :

(१) अलगू --"यह जो नंदो है .... यह तो और भी आसमानपर चढी रहती है।" (पृ.१७)

(२) हरखू ---"मैं तो बरदम समझाता हूं उसे, कि सूकाको अब तिनकेसे भी न मारो।" (पृ.१८)

(३) राजी ---"समझाते नहीं आग हो . . . .घारमें लगे आग गाँव छोले फाग।" (पृ.१८)

(३) अलगू ---"दिनभार में यही घास लेकर आये हैं, वह भी पूरा काटा नहीं गया, नेसुहेपर पडा है, और घारमें आग लगाकर न जाने कहाँ दरवाजेसे खिसक गये हैं।" (पृ.१८)

(४) राजी ----"पानीमें आग लगाना तुम्हें ही आता है, यह सब तुम्हें ही मुबारक रहे।" (पृ.२३)

(५) नंदो ---"तीनके तीनों कहते हैं कि तू खूब पानीमें आग लगाती है।" (पृ.२४)

(६) तेजई ---"बस चँदन लगाकर उन्हें दोनों वक्त पूजो।" (पृ.२५)

(७) मूरत ---"बिलकुल सही -- मैं भी यही सोचता हूं न रहे बाँस न बजे बाँसुरी।" (पृ.२६)

(८) रामदीन --- "पचास रुपये पिछले हुए, उसके आज दो साल हुए, अगर उसके सूद लगाता तो अब तक वह राईसे पहाड हो गया होता।" (पृ. ३१)

(९) राजी --- "जहरकी बुतायी है। सारा काँटा यही लगाती है।" (पृ. ५०)

(१०) राजी --- "दीदीको यही ताना बडकू ने मारा था, कहा था, बाझ कहीं की, न फल न फूल।" (पृ. ५०)

(११) भागौती --- "रहने दो इसी तरह, आजही तो इसे छठी का दूध याद आयेगा।" (पृ. ६१)

(१२) अलगू --- "आग बोनेवाली तो यह खाडी है। तीनसे तेरह करती चलती है।" (पृ. ६६)

(१३) राजी --- "जिस घर जाएगी वहाँ साँझ ही आग लगेगी।" (पृ. ६६)

(१४) भागौती --- "कभी आके सचमुच तुमपे मेंहदी रचूँगा, समझी की नहीं।" (पृ. ९३)

(१५) तेजई --- "हाँ और क्या, दूध की जली बिलार माठा फूंक फूंककर पीती है।" (पृ. १०४)

(१६) भागौती --- "बंजर धरती में भी कभी कुछ हुआ है काका, या बेंत में कभी किसीने फल फूल लगते देखा है।" (पृ. १०२)

(१७) लच्छी -- "रुई न सूत जोलाहोंमें लडाई।" (पृ. ११२)

(१८) सूका --- "हैरान होकर पराएकी बाँह भी पकडो, वह भी न आदमी निकला, जहाँ गयी डाढो रानी, तहाँ पडा पाथर-पानी।" (पृ. ११३)

(१९) सूका --"तुम्हारे भागभर में अपने भागका साया नहीं पडने दूंगी" (पृ ११३)

(२०) लच्छी --- "आज मुझे तिलभर भूख नहीं दीदी" (पृ ११६)

(२१) सूका --"मैं अपने कलेजेपर यह भी एक बडा पत्थर रख लूंगी, मैं यहाँ इन सीकचोंमें अकेली रहकर काट लूंगी" (पृ ११३)

(२२) भागौती ---"छातीकी एकाएक हड्डी तोड दूंगा, अगर तिलभर भी मेटा मेरी बातको" (पृ ९१)

(२३) सूका ---"ऐसी प्रीतिमें लगे आग। उसे भी डसे नागन ..." (पृ ११४)

(२४) सूका ---- . . ."फिर जिस तरह मेरे करममें आग लगी है, वैसा किसीका नहीं है बिटटी । तेरी तो भाग उजागर है, चाँद सूरज हैं तेरे भागमें" (पृ १२३)

(२५) पल्ली औरत ---"मैं भी मानती हूं दीदी। यह सब सही, लेकिन उसके सीनेपर जो हरदम दो मनका पत्थर रखा रहता था" (पृ १२७)

(२६) सूका ---"मेरी माँ कहा करती थी, जिस औरतके पेटमें दूधमुँहे बच्चे ने अपना मुंह नहीं मारा, वह औरत नहीं, बब्बूल का पेड है जिसपर जल्दी पंछी भी नहीं बैठते" (पृ १३९)

(२७) सूका ---"करमने जब जहरका पेड लगाया था, तब उसमें मेले कहासे फलेंगे" (पृ १४३)

(२८) औरत ---"तुम्हीं जैसी पत्थर की औरत हो कि सब ओढती जा रही हो।" (पृ-८१)

(२९) सूका ---"अंधाकुआ यहीं है जिसके संग मैं ब्याही गयी हूं।" (पृ-१२१)

इस तरह अंधाकुआके प्राकृतिक लोकउपमान इस लोकत्तवके अंतर्गत क्रमशः आसमान, तिनका, आग, फाग, चंदन, बांस, बांसुरी, राई, पहाड जहर, कांटा, फल, फूल, दूध, रुई, सूत, पाथर पानी, साया, तिल, दूध पत्थर, सीकचे, मेहंदी, बेंत, सुधा, बंजर, अंधाकुआ में ये उदाहरण देखे।

पशुपक्षी वर्ग :---- अब लोकतत्वोंके अंतर्गत लोक उपमान का दुसरा पक्षी वर्ग संबंधी जिस तरह प्राकृतिक लोक उपमानोंके संदर्भमें हमने देखा कि अंधाकुआके पात्र प्राकृतिक उदाहरणों व्दारा लोकउपमान, व्यक्त करते हैं। उसी तरह पशुपक्षी वर्ग के उदाहरणोंव्दारा उन्होंने लोक उपमान स्पष्ट किए हैं। इनके विविध उदाहरण अंधाकुआके आधारपर देखना है।

(१) मिनकू ----"लेकिन भागौती याद रखो, खूंटमें बांधकर गऊ मार रहे हो।" (पृ-५)

(२) भागौती ---"वह गऊ है . . . तुम सुकियाको गऊ कहते हो। डायन को गऊ।" (पृ-५)

(३) भागौती ---"चुडैल, यहां क्यों आई ?" (पृ-७)

(४) भागौती ---"इसे देखते ही मुझपर छिपकली चढ जाती है।" (पृ-८)

(५) भागोती --"बेहया कहीं की। बडी लाज ढकने चलो। तनकी खोरही मलमलका भगवा, हूं।" (पृ. ९)

(६) भागोती --"सुअरकी बच्चीने मुझे घाट घाटका पानी पिलवाया है।" (पृ. ११)

(७) भागोती ---"सुकियाको घरमें आये आज डेढ़ महीने हो रहे हैं, लेकिन हराम है उसका इधरसे उधर एक तिनका तक हिलाना, दोनों वक्त भैंस की तरह खा लेगी और घोड़ा बेंचकर सोती रहेगी।" १२ (पृ.)

(८) भागोती ....." दुम उठाये यहाँसे कलकत्ता, फिर न जाने कहाँ कहाँ तक तो भागती रही।" (पृ. १२)

(९) अलगू "... यह जो नंदो है... यह तो और भी आसमानपर चढ़ी रहती है। मुंह की लगी डोमड़ी गावे ताल बेताल" (पृ. १७)

(१०) अलगू ----"हूं। अच्छा तमाशा है हमारी गृहस्थी का! मर मर करें बैलवे बैठे खायँ तुरंग।" (पृ. २०)

(११) राजी ---"मुझे क्या! मेरा जो होना था हो गया, लेकिन तुम्हें उस दिन पता लगेगा, जब तुम अपने घर जाओगी, पराये घरमें दूल्हन बन के बैठोगी और तुम्हें जब तुम्हारी ननद इसी तरह बिच्छू के डंक मारेगी, तब पता लगेला, अभी क्या" (पृ. २४)

(१२) भागोती ---"उल्लू कहीं का, वह भी सुकिया के लिये बढ़ी हमदर्दी, रखता है" (पृ. २५)

(१३) तेजई --- "क्या बात करते हो भागोती बाबू तुम भी / अरे मारके आगे तो भूत भागता है।" (पृ २८)

(१४) मुरुत --- "भाई मतलब पर तो आदमी गधे को भी दादा कहता है, सूका तो फिर भी. . . ।" (पृ २९)

(१५) रामदीन --- "अरे खुद कौन आता है / ये सब कहनेकी बातें हैं, अब तो व वह जमाना ही न रहा, एक हाथ से लेना, दूसरे से दे देना, न कुत्ता भूकता था, न पहरु भागते थे।" (पृ ३१)

(१६) नंदो --- "कलमुही न जाने कहाँ नागन ऐसी बैठी थी।" (पृ ५७)

(१७) भागोती --- "देखा राजी / कान पार के सुन, समझा बुझाकर घर-गृहस्थीमें पैर रखा करना, नहीं तो गेहूंके साथ घुन भी पीस उठता है/ मालूम है कि नहीं।" (पृ ६३)

(१८) अलगू --- "नंदो सुन, बाँडी विस्तुइया बाधान से नजारा मारे, मारते मारते सुसरी तेरी।" (पृ ६४)

(१९) अलगू --- "कि उसे जानवरोंकी तरह न मारो।" (पृ ६७)

(२०) सूका --- "मैं तो बाबू उसकी आहट पहचानती हूँ न/साँप जब चलता है तो उसकी आहट कोई नहीं पाता, तभी उसकी काट इतनी बिखधार होती है।" (पृ ६९)

(२१) सूका --- "तुझे गौकी सौगंध अगर तू मुझे उसी तरह नहीं बाँध देता।" (पृ ७७)

(२२) सूका -- "मुझसे बदला लेनेके लिए उसने दूसरी की है --" जो न मरी तू काटे कीरा, तो तू सौत के पीरा।" (पृ ८८)

(२३) भागौती --- "हे लच्छीकी दुम खरीदकर लाया हूं। काटकर फैंक दूगा।" (पृ. ९२)

(२४) भागौती --- "सीधेसे दे देती तो क्या हाथमें नागन डस लेती।" (पृ. ११२)

(२५) भागौती --- "जलमें रहकर मगर से बैर!" (पृ. ११४)

(२६) लच्छी --- "देख लेना दीदी! आज यह जैसे घोडों बेंचकर सोयेगा।" (पृ. ११६)

(२७) सूका --- "गया काला नाग।" (पृ. ११९)

(२८) सूका --- "तूने तो देखा ही है, उसने मुझे कहाँ-कहाँ नहीं दागा, कहीं तो नहीं बचा है। वही मसल है बिटटी कि " अब क्या बगुला लगायो दीठ, सौ सौ जाल रंग मरि पीठ! (पृ. १२१)

(२९) सूका -- "उस तरह था तब भी मुझे रोज भूज रहा था, आज इस तरह है, तब भी मुझे जिंदा मछली की तरह भुज रहा है।" (पृ. १३४)

(३०) सूका --- "मेरी माँ कहा करती थी, जिस औरत के पेटमें दूध मुहें बच्चेने अपना मुंह नहीं मारा, वह औरत नहीं बबूल का पेड है जिसपर जल्दी पंछी भी नहीं बैठते।" (पृ. १३५)

(३१) सूका --- "मेरे सात मुददूई को ऐसे परानी में न भेंट हो।" (पृ. १४४)

(३२) साजी --- "बडी मिठाई में ~~कोया~~ कीरा पडता है।" (पृ. १५०)

इस तरह अंधाकुआँ नाटकके पशुपक्षी वर्गके अंतर्गत लोक-उपमान इस लोकतत्वमें हमने क्रमशः निम्नलिखित उदाहरण देखें ---गऊ, चुडैल, छिपकला, खोरही, सुअर, भैंस, घोडा, डोमडी, बैलवे, तुरंग, बिच्छू, उल्लू, भूत, गधो, कुत्ता, नागन, घुन, बाधान, सुसरी, जानवर, साँप, गो, कीरा, मगर, काला नाग, बगुला, दुम, मछली, पंछी, परानी, कौया।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

इन उदाहरणोंकी ओर सूक्ष्मतासे देखनेपर हमें यह दिखाई, देता है कि अंधाकुआंके अधिकतर पात्रोंने पशुपक्षी वर्ग के उपमानोंव्दारा अपना अपना अभिप्राय व्यक्त किया है।

अब लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोक उपमान का तोसरा प्रकार --मानवी वर्ग-कौं है। लालके अंधाकुआँ नाटकमें मानवी र्गी के अंतर्गत जो विशिष्ट उदाहरण आये हैं उनको हम क्रमश: देखने जा रहे हैं ------

(१) सूका --- "अभी अभी इसने जो मुझे कसाईकी तरह मारा है।" (पृ.१०)

(२) मिनकू ---"क्या हदकर डाला भागौती तूने • • • बोलो यही इन्सानियत है, उसके तन ढकलेके लिए तूने दो हाथ कपडा तब न दिया ••• जबाब दो।" (पृ.१०)

(३) मिनकू ---"तो यह भी न होगा कि तुम सूका को हत्यारेकी तरह अपने घर रक्खो।" (पृ.१०)

(४) भागौती ---"मेरी खोपडी मत चाटो।" (पृ.४१)

(५) पहली औरत ---"आँचल भी तो अभी तक सूना है, भगवान वही भार देता तब भी।" (पृ.५०)

(६) राजी ---"तब कहा भी था, इस बाझा को खिला पिलाकर क्या होगा।" (पृ.५०)

(७) राजी --" इसपर सूका दीदीने जमकर कहा था --- आग लगे मेरी कोख और आँचलमें।" (पृ.५०)

(८) अलगू "------... दुनियामें कितनी औरते इस तरह होती हैं लेकिन फिर घर वापस आ आती है । उनकी मानमर्यादा होती है। घरगृहस्थीमें अगर कोई बात हो भी गयी तो मरद उसका पुतला नहीं टांगता।" (पृ५७)

(९) मिनकू ---"तुम्हें कुछ नहीं सूझता, तुम अंधे हो । आगापीछा नहीं सोचते।" (पृ५८)

(१०) मिनकू ---"छोडोगे कैसे इसी लिए तो पैदा ही हुए हो। रस्सी जल गयी लेकिन ऐंठन न गयी।" (पृ५८)

(११) राजी ---"किसके मुंहमें है बत्तिस दांत जो मेरी खाल खींचेगा। जबान सम्हालकर निकालो नहीं तो।" (पृ६१)

(१२) राजी ---"भगवान की भी आंख फूटी है।" (पृ६२)

(१३) नैंदो ---"आज पता चला कि नमक तेल का क्या भाव है।" (पृ६३)

(१४) अलगू ---"आग लगाती फिरती है घरमें, याद रखना, गौने जाकर इस घर का मुंह न देखने पायेगी।" (पृ६४)

(१५) नैंदो ---"दांत पीसो जाकर उनपर जो भीतर बैठी हैं, मुझे आंख न दिखाओ।" (पृ६४)

(१६) भगौती ---"हो जान अलग,कौन खाली घडा दिखाता है, यह न समझना कि मुझे किसी की परवाह है।" (पृ६६)

(१७) अलगू ---"तभी तो तुझे आटे दालका भाव मालूम होगा।" (पृ६६)

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

(१८) राजी --- "दूसरेके कंधो पर चढकर खूब धार फकने आता है।" (पृ६७)

(१९) औरत --- "हटाओ दीदी तुम भी क्या हँसी करती हो, अरे अकेले चक्की चलानी थी, तबीयत भुलवानेके लिए गा दिया, नहीं तो कुमालपुर में अब क्या गाना, क्या रोना दीदी, अरे वही मसल है ; कि भूल गये राग रंग भूल गयो सगरी, तीन चीज याद रहो नोन तेल लकडी।" (पृ८५)

(२०) औरत --- "आय परया क पींजरे, रटो राम का नाम।" (पृ८७)

(२१) भागौती --- "बोला क्यों नहीं जाता। मुँहमें दही जमा रखा है।" (पृ८९)

(२२) हरखू --- "सारे पंच तो अपने हाथ में ही थो।" (पृ९०)

(२३) भागौती --- . . . . "फिर तो जानते ही हो मौसिया, धरका भेदी लंका ढाहे।" (पृ९०)

(२४) हरखू --- "रहे बुद्धू के बुद्धू, तब बँटवारेसे क्या फायदा ? ई है कि वही मसल है, पूतसे बैर पतोहू से नाता।" (पृ९१)

(२५) "भागौती --- तब सुकाने अनाज कैसे बेचा ? और कैसे यह साडी खरीदी गयी, बोल नहीं तो अभी खाल खींच लूँगा।" (पृ९४)

(२६) भागौती --- "करना ही होगा, और नंगे होकर करना होगा।" (पृ९५)

(२७) भागौती --- "मन भरका सिर न हिलाओ, जबान से बोला करो।" (पृ९६)

(२८) भागौती --- "तुम तो मुझे झूठ-मूठमें बदनाम करते हो काका। अब तो मैंने सब राह पैंडा भी छोड दिया, न ऊधो की लेने, न माधो की देने।" (पृ१०१)

(२९) भागौती --"अपनी आल-औलाद के लिए इंसान को जो भी कुछ न करना पड़ जाये, मजबूरी ही है, क्या किया जाय, नहीं तो क्या मुझे अच्छा लगता है कि चलनेको दम नहीं, रजाईका फाड़ बांधूं।" [पृ १०२]

(३०) मिनकू ---"लाज तो आती है, इतनी आती है कि अपनी आँख फोड लूं" [पृ १०३]

(३१) लच्छी ---"वह जो मेरे काक है न, जिसको मेरे दादा मरते समय मुझे सौंप गये थे, उसीने दीदी, मेरा बेड़ा डुबाया। यहाके तेजई मुरत को हैजा ले जाय।" [पृ ११०]

(३२) लच्छी ---"लेकिन भागमें तो था पहले कमालपुर, ब्रहम की काटी कौन मेटता दीदी।" [पृ १११]

(३३) भागौती ---"तेरे प्रभोका द्वार जले और तू मंगल गावे, यही तेरी प्रीतिकी रीति है।" [पृ ११४]

(३४) सूका ---"ऐसी प्रीतिमें लगे आग। उसे भी डंसे नागन और इंदरवाकी टिकडी के साथ तू भी उसके पाँव दबाने जा।" [पृ ११४]

(३५) सूका ---"न जाने किसने इसका गला फाड़ा था।" [पृ ११५]

(३६) भागौती ---"चलो जी भरकर देखलो सूका, आज तेरी लंका में आग लगी है। जा आँख पसारकर देख, तेरी इंदरका द्वार स्वाहा हो रहा है।" [पृ ११४]

(३७) सूका ---"बस, अभी सो जायगा, खाटपर गिरा नहीं कि मुर्देकी तरह सोया।" [पृ ११९]

(३८) सूका --"सब मैना पूरी हो, दूधो नहाव, पूतो फलो।" (पृ.१२१)

(३९) सूका --"बोली तानेकी अगिन बान छोडता रहता है।" (पृ.१३०)

(४०) सूका --" न जाने कहाँ भागवानने उसका कागत छिपा रक्खा है, न जीने को, न मरनेको।" (पृ.१३३)

(४१) सूका --"अलगू बाबू, मिनकू काका और मुडेराके वैद सबने मुझे मना किया है कि उसे भीतर आडेमें ही रखना, पुरवा हवा न लगने पाये लेकिन वह मुझे दिना फोड फोडकर गाली दे रहा है, यह बाँहमें देखो, सेरभार का कटोरा फेंक कर मुझे मारा है।" (पृ.१३४)

(४२) सूका ---"जाओ अपने तेजई -मूरतके द्वार हो आवो। वे तो तुम्हारे ससुर -समधी थो, कहाँ हैं अब।" (पृ.१३७)

इस तरह लोकतत्त्वोंके अंतर्गत आलोच्य नाटयकृति अंधाकुआँमें मानवी वर्ग शीर्षकके अंतर्गत विविध लोक उपमान देखें। उदा.

संदर्भ — लोकउपमान।

(१) भागौती = कसाई (पृ.१०)
(२) कपडा = दो हाथ (पृ.१०)
(३) भागौती = हत्यारा (पृ.१०)
(४) सताना -खोपडी चाटना (पृ.४१)
(५) बाँझ = आँचल सूना होना (पृ.५०)
(६) सूका = बाँझ (पृ.५०)
(७) बाँझ = कौरव और आँचलमें आग लगना (पृ.५०)
(८) सबको बताना = पुतला टाँगना (पृ.५७)

संदर्भ- लोकउपमान।

(९) नासमझ = अंधे (पृ ५८)

(१०) स्वभाव कायम = रस्सी जल गई लेकिन ऐंठन न गई (पृ ५८)

(११) समर्थ = बत्तिस दाँतोंका होना।(पृ ६१)

(१२) भाग्यहीन = आँख फूटना।(पृ ६२)

(१३) यथार्थ = नमक तेल का भाव समझाना (पृ ६३)

(१४) वापस न आना = मुँह न देखाना (पृ ६४)

(१५) क्रुद्ध, डराना = दाँत पीसना, आँख दिखाना।(पृ १४)

(१६) अशुभ = खाली हाथ दिखाना (पृ ६६)

(१७) वास्तविकता = आटे दालका भाव मालूम होना (पृ ६६)

(१८) सर्वनाश करना = दूसरेके कंधोपर चढकर घर फूंकना।(पृ ६७)

(१९) एकरसता = नोन तेल लकडी (पृ ८५)

(२०) पराधीनता = आम परसो कि पींजरे, रहो रामका नाम (पृ ८७)

(२१) मौन = मुहमें दही रखना (पृ ८९)

(२२) काबूमें, अधीन = हाथमें (पृ ९०)

(२३) चुगली - घर का भेदी लंका ढाहे (पृ ९०)

(२४) ~~एक सेकी मूता~~ शत्रुता दूसरेसे नाता -- पूतसे बैर पतोहू सें नाता।(पृ ९१)

(२५) मार पीट करना = खाल खींचना (पृ ९४)

(२६) यथार्थमें = नंगे होकर करना (पृ ९५)

(२७) नकार सूचक भाव = मन भरका सिर हिलाना (पृ ९६)

(२८) किसीमें हिस्सा न लेना = उधो की लेने न माधोकी देने (पृ १०१)

(२९) अशक्य होना = चलनेमें दम नहीं, रजाईका फांड बांधा। (पृ १०२)

(३०) लाजसे न देख सकना = आँखें फोड लेना (पृ १०३)

संदर्भ — लोकउपमान।

(३१) सर्वनाश करना = बेडा डुबाना।(पृ.११०)

(३२) मरें = है जा ले जाय।(पृ.११०)
अशक्य = ब्रह्मकी कांटी न मेटना।(पृ.१११)

(३३) आनंद = मंगल गावे।(पृ.११४)

(३४) बुरा हो = टिकठीके साथ जाकर पांव दबाना(पृ.११४)

(३५) चिल्लाना = गला फाडना।(पृ.११५)

(३६) प्रेमीका हार = लंका।(पृ.११४)

(३७) निश्चल = मुर्देकी तरह।(पृ.११९)

(३८) इच्छापूर्ती = दूधो नहाव, पूतो फलो।(पृ.१२१)

(३९) कठोर बोलना = बोली तानेकी अगिन बान छोडना।(पृ.१३०)

(४०) मौत न आना = कागज छिपा रखाना।(पृ.१३३)

(४१) जोरसे = छाना फोड फोडकर।(पृ.१३४)

(४२) कटोरा = सेरभार का।(पृ.१३४)

इस तरह अंधाकुआँमें लोकउपमानोंका प्रथम, व्दितीय और तृतीय प्रकार क्रमशः प्राकृतिक, पशुपक्षीकी तथा मानवी वर्ग संबंधी उदाहरण देखे। प्रारंभामें लोकउपमानोंकी जो जो विशेषताएं देखी वे सब की सब यहां लागू होती हैं। अंधाकुआँमें लोकउपमानोंका प्रयोग आरंभासे अंततक खूब हुआ है।

. . . .

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR